CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन का प्रकाशन नं० २१३

वि०
१५८

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

मूल्य चार आना

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन लखनऊ

सन् १९३२ ई० में यह धर्म प्रचारिणी सभा स्थापित हुई थी। अपने अन्त काल से यह सभी ऐसे साहित्य को प्रकाशित करती रही है। जो कि इस संसार की वर्तमान परिस्थिति में जब कि माया वादी सिद्धान्तों ने मानवता का विनाश किया है, मानव जाति को ऐसे सात्विक जीवन धर्म एवं कर्त्तव्य का मार्ग दिखलावे जिस पर चल कर अज्ञान रुपी अंधकार में भटकी हुई आत्मा को शान्ति तथा सुख प्राप्त हो सके। हम आशा करते हैं कि आप (पाठक) हमें अपना सहयोग देकर इस उत्तम तथा पावन सिद्धान्त के प्रसार को सफल बनावें। आप स्वयं ध्यान पूर्वक इस साहित्य का अवलोकन करें तथा खरीद कर दूसरों में बिना मूल्य लिये हुये वितरित करें।

सेवकः—

सै० इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

लेखक

मौलाना सैयद अली नक़ी नक़वी मुजतहिद

प्रोफ़ेसर लखनऊ विश्वविद्यालय

अनुवादक

सैयद मुहिब्बुल हसन रिज़वी हल्लौरी

अध्यापक यादगारे हुसैनी हायर सेकंड्री स्कूल,

इलाहाबाद ।

प्रकाशक

सैयद इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

लखनऊ ।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

प्रस्तावना

पवित्र जीवनियों के सिलसिले की यह सातवीं कड़ी आप की सेवा में उपस्थित की जा रही है जो पाँचवें इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन के सम्बंध में है।

आशा है कि धर्मी भाई इस पुस्तिका की अधिक से अधिक संख्यायें खरीद कर वितरित करेंगे

भवदीयः—

सैयद इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

इमाम का अर्थ है नेता। और सच्चा नेता वही हो सकता है जिसके पीछे चल कर मनुष्य मुक्ति का हक़दार बन सके। और मुक्ति का भागी वही बन सकता है जो ऐसे मनुष्य का अनुकरण करे जो स्वयं जीवन के सभी क्षेत्रों में ऊंचाई के शिखर पर पहुँचा हुआ हो जिसे करतार ने मनुष्यों की भलाई के लिये पसन्द किया हो। हज़रत मुहम्मद रसूलिल्लाह के पाक घराने की विशेषता यह थी कि इस घर में पैग़म्बर के बाद लगातार बारह व्यक्ति ऐसे हुए जो मानवता में पूर्ण तथा निपुण थीं। मानवी गुणों का आदर्श इन में की प्रत्येक व्यक्ति था। प्रत्येक ख़ल्क़े ख़ुदा के पथपदर्शन तथा नेत्रित्व के पद पर अल्लाह की ओर से पहुँचा हुआ था। यह बारह इमाम हैं जिन में से पांचवें के जीवन चरित्र का संक्षिप्त वर्णन यहां करना है।

नाम एवं वंशज

पांचवे इमाम का नाम अपने पुरखे हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम के नाम पर मुहम्मद था और बाक़िर पदवी। इसी कारण से आप इमाम मुहम्मदे बाक़िर के नाम से प्रसिद्ध हुए। बारह इमामों में से यह विशेषता आप ही को प्राप्त थी कि आप का वंशज मां और बाप दोनों की ओर से रसूलिल्लाह तक पहुँचता है। पिता

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमाम ज़ैनुलआबिदीन चौथे इमाम थे जिनके जीवन का हाल इस से पूर्व वाली पत्रिका में लिखा जा चुका है और यह बताया जा चुका है कि इमाम ज़ैनुलआबिदीन पुत्र थे सय्यदुश्शुहदा हज़रत इमाम हुसैन के जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (अ० स० भ०) के छोटे नाती थे। और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) की माता उम्मे अब्दुल्लाह फ़ातिमा हज़रत इमाम हसन (अ० स० भ०) की सुपुत्री थीं जो हज़रत रसूले ख़ुदा के बड़े नाती थे। इस प्रकार हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) रसूल के उच्च गुणों और अली व फ़ात्मा के वंश की पवित्र विशेषताओं के माता और पिता दोनों की ओर से उत्तरोधिकारी हुए।

जन्म

आप का जन्म शुक्रवार के दिन पहली रजब सन् ५७ हिजरी में हुआ यह वह समय था जब इमाम हसन (अ० स० भ०) की मृत्यु को सात वर्ष बीत चुके थे और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मदीने में शांत जीवन व्यतीत कर रहे थे और समय की चाल तेज़ी के साथ कर्बला की घटना के कारण इकट्ठा कर रही थी। समय मुहम्मद साहब के घराने वालों तथा उन के शीयों के प्रतिकूल था। अली (अ० स० भ०) के मानने वाले चुन चुन कर क़त्ल किए जा रहे थे। उस समय इस बालक का जन्म मानों कर्बला के जिहाद में सम्मिलत होने के लिये था।

कर्बला की घटना

तीन वर्ष तक हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ०स०भ०)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमाम हुसैन के हाथों परवान चढ़ रहे थे जब आप पूरे तीन वर्षों के हो गये तो इमाम हुसैन (अ० स० भ०) ने मदीने से यात्रा की। इस बाल्य जीवन में इमाम मुहम्मद बाक़िर भी अपने दादा के साथ यात्रा की कठिनाइयों का सहन करते रहे। इमाम हुसैन ने मक्के में शरण लिया फिर कूफ़े की यात्रा की और फिर कर्बला पहुँचे। सातवीं मुहर्रम से जब पानी बन्द हो गया तो अवश्य मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) ने भी तीन दिन प्यास की तकलीफ़ उठाई। यह केवल अल्लाह के न चाहने के कारण कर्बला में उन की क़ुरबानी नहीं हुई अल्लाह ने उन्हें जीवित ही रखना उचित समझा वरन् अली असग़र छः महीने का बच्चा तीर से कर्बला में शहीद हो गया किन्तु मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को मैदान में शहादत के लिये नहीं लाया गया क्योंकि इमामत्व का सिलसिला संसार में (अल्लाह को) क़ायम करना था। और अल्लाह की मर्ज़ी यही हुई कि वह कर्बला के जिहाद में उसी प्रकार शरीक हुए जैसे उन के बीमार पिता हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन शरीक रहे। आशूर के दिन (दसवीं मुहर्रम को) दिन भर रिश्तेदारों की लाशों का ख़ैमों में दिन भर आना, बीबियों में रुदन होना बच्चों में विलाप का होना, अली असग़र का तीर से मारा जाना इमाम हुसैन का बिदा लेने के बाद युद्धस्थल से न लौटना इमाम के घोड़े का ख़ाली ज़ीन ले कर ख़ैमे के द्वार पर आना और फिर पवित्र एवं पावन ख़ैमों में हाहाकार मचना यह सभी दृश्य मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) अपने नेत्रों द्वारा देख रहे थे। ख़ैमों में आग का लगना। सामान की लूट बीबियों के सिरों से चादरों का छिनना आग की लपेटों के बीच से बच्चों का घबराहट में भागना। ऐसे कुसमय में मुहम्मद बाक़िर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(अ० स० भ०) के कोमल हृदय पर क्या बीत गई और इस भयानक दृश्य ने उन के हृदय पर क्या छाप छोड़ी इस का अनुभव किसी दूसरे मनुष्य को नहीं हो सकता।

ग्यारह मुहर्रम के बाद मां फुफी, दादी, नानी सब को शत्रु की क़ैद में बन्दी देखा। यदि सकीना के बाहुओं में रस्सी बांधी गई तो मुहम्मद बाक़िर के गले में भी अत्याचार की रस्सी डाली गई होगी। करबला से कूफ़ा, कूफ़ा से शाम और फिर रिहाई के पश्चात मदीने की वापसी। इन मन्जिलों पर न जाने कितने दुःख जो मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) के नन्हे हृदय को सहन करना पड़े और ग़म के कितने छाप ऐसे हृदय पर बैठे कि समस्त जीवन में क़ायम रहे।

पालन पोषण

कर्बला की घटना के पश्चात इमाम जैनुलआबिदीन का जीवन संसार की उलझनों से अलग थलग शांत तथा ख़ामोशी का था। संसार से मेल जोल या नाता बिल्कुल छोड़ दिया था कभी पूजा (इबादत) और कभी पिता का शोक मनाना और उनका मातम। केवल उन दो कार्यों में ही उनका समय व्यतीत होता था। यही समय वह था कि ऐसे वातावरण में इमाम मुहम्मद बाक़िर बढ़े पले। सन् ६१ हिजरी से सन् ९५ हिजरी तक ३४ वर्ष अपने पवित्र पिता के जीवन चरित्र का अध्ययन करते रहे और अपने पिता के जीवन के आइने में सदा नज़र करते रहे।

बाप की मृत्यु और इमामत्व का भार

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर भरपूर जवानी की मंज़िलों को तै करते हुए एक साथ शारीरिक तथा अध्यात्मिक कमालों के सब से ऊँचे शिखर पर पहुँचे हुए थे और जब आप की आयु ३८ वर्ष की थी तो आप के पिता इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ० स० भ०) की मृत्यु हूई हज़रत ने अपने मरने के समय एक सन्दूक़ को जिसमें अहले बैत (गृहवालों) के विशेष ज्ञान की पुस्तकें थीं इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ०स०भ०) को दिया इस के अतिरिक्त अपने और बच्चों को एकत्रित करके सबका भार इमाम मुहम्मद बाक़िर को सौंपा। और ज़रूरी वसीयतें कीं इस के बाद इमामत्त्व का भार इमाम मुहम्मद बाक़िर पर पड़ा। आप पाँचवें इमाम रसूल के अहलेबैत में से हुए और रसूल के सच्चे जानशीन हुए।

उस काल की विशेषताएं

यह वह समय था जब बनी उमैया की सलतनत अपनी शक्ति के लिहाज़ से बुढ़ापे की मंज़िलों से गुज़र रही थी। बनी हाशिम पर अत्याचार, विशेष कर कर्बला की घटना ने बड़ी हद तक संसार की आँखें खोल दी थीं और जब यज़ीद स्वयं अपने उस अल्प जीवनकाल में जो कर्बला के बाद हुआ अपने किये पर लज्जित हो चुका था। और उसके बुरे परिणाम को महसूस कर चुका था और उस के बाद उस का पुत्र मुआविया अपने बाप और दादा के चरित्र से अपनी घृणा प्रकट कर के सलतनत छोड़ चुका था तो बाद के बादशाहों को कहां तक उन अत्याचारों के बुरे परिणामों का अन्दाज़ा न होता जब कि उस समय तव्वाबीन संघ का जिहाद, मुख़्तार और उन के साथियों का हुसैन के क़ातिलों से बदला लेने की घटना और

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इसी प्रकार की बहुत सी घटनाएँ घटित हो चुकी थीं। जिनसे शाम सरकार की नीव हिल चुकी थी। इस का परिणाम यह था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को सरकार के अत्याचार से कुछ आज़ादी प्राप्त हो चुकी थी। आप को संसार के सुधार का कुछ अधिक समय मिल सका था।

इमाम हुसैन के शोक मनाने से लगावट

आप कर्बला की घटना अपनी आँखों से देखे हुए थे फिर अपने पिता के उस जीवन को देख चुके थे जो इमाम हुसैन पर रोने में व्यतीत हुआ था। और यह ध्यान भी आप को पीड़ा पहुँचाता था कि उन के पिता इतना अवसर न पा सके कि दूसरों को इमाम हुसैन (अ० स० भ०) का मातम करने की दावत दे पाते। इस का यह फल था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को इस में ख़ास रुचि रही और लगाव के साथ आप मजलिसें करते थे और कुमैतबिन ज़ैद असदी जो उस समय के बड़े कवी थे उन को बुला कर मरसिया पढ़वाते थे और सुनते थे। यही वह प्रारंम्भ था कि जिस को तत्पश्चात इमाम जाफ़रे सादिक़ और इमाम रिज़ा (अ० स० भ०) के समय में बड़ी उन्नति प्राप्त हुई।

ज्ञान का केन्द्र

नदी का पानी यदि किसी बन्ध के बांध दिए जाने से कुछ दिन रुका रहे फिर किसी कारण से वह बन्ध टूट जाए तो पानी बड़ी तेज़ी से बहा हुआ मालूम पड़ेगा। अहलेबैत के इमामों में से प्रत्येक के सीने में ज्ञान का एक लहराता हुआ समुद्र था परन्तु बहुधा इस समुद्र से प्यासे अपनी प्यास बुझाने

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

का सरकार की ओर से रोक थाम के कारण अवसर न पाते। इमाम मुहम्मद बाक़िर के समय में जब हिंसा का शिकंजा ज़रा ढीला हुआ तो अहलेबैत के ज्ञान का समुद्र पूरी शक्ति के साथ उंम्डा और हज़ारों प्यासों की ज्ञानिक त्रिषण को बुझाता हुआ अल्लाही आदेशों की खेती सींचता हुआ समस्त संसार में फैल गया। इस अनन्तज्ञान के प्रदर्शन के फलःस्वरूप आप की पदवी बाक़िर हुई। इस शब्द के अर्थ हैं आन्तरिक बातों को प्रकट करने वाला, चूँकि आप ने अपने ज्ञान द्वारा बहुत से गुप्त रहस्यों को खोला जो दैविक थे इस लिए सब मुसलमान आप को बाक़िर के नाम से याद करने लगे। आप से अहलेबैत का ज्ञान प्राप्त करने वालों की संख्या सैकड़ों तक पहुँची हुई थी। बहुत से ऐसे व्यक्ति जो धर्म के अनुसार आप से श्रद्धा नहीं रखते थे और जिन्हें सुन्नी समप्रदाय अपने मुहद्दसीन में उच्च स्थान देती है वह भी इमाम मुहम्मद बाक़िर की चौखट पर ज्ञान की प्राप्ति के लिए आते थे जैसे ज़हरी, इमाम औपेज़ाई, अतः इब्ने जुरैह, क़ाज़ी हिफ्स इब्ने ग़ियास आदि यह सब इमाम मुहम्मद बाक़िर के शिष्यों में गिने जाते हैं।

अहलेबैत के ज्ञान की शिक्षा का प्रसार

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर के समय में अहलेबैत के ज्ञान की रक्षा का प्रबंध हुआ और हज़रत के शिष्यों ने उस शिक्षा से जो उन्हें हज़रत से मिली बहुत सी पुस्तकें कला तथा विज्ञान पर लिखीं। नीचे हज़रत के कुछ शिशुओं और उन की रचनाओं का वर्णन किया जाता है जिस से आप को अनुमान होगा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) द्वारा इस्लामी दुनिया ने ज्ञान तथा धर्म की कितनी उन्नती की।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(१) अबान इब्ने तग़्लिब :—यह इल्मे क़िराअत (क़ुरान-पठन विद्या) तथा लग़ात (भाषा) के इमाम माने गये हैं। सब से पहले किताब ग़रीबुलक़ुरआन (क़ुरआन मजीद के कठिन शब्दों की व्याख्या) उन्हों ने ही लिखी थी और १४१ हिजरी में उनकी मृत्युहुई।

(२) अबू जाफ़र मुहम्मद इब्ने हसन इब्ने अबीसारा रुवासी-इल्मे क़िराअत, नह्व (व्याकरण) और तफ़सीर के प्रसिद्ध ज्ञाता थे किताबुलफ़ैसल माफ़िलक़ुरान आदि पांच पुस्तकों को रचनायक हैं। सन् १०१ हिजरी में इनकी मृत्यु हूई।

(३) अब्दुल्लाह इब्ने मैमून असवदुलक़िदाह - इन की रचनाओं में से एक पुस्तक मबअस नबी रसूलिल्लाह के जीवन इतिहास तथा चरित्र पर और एक पुस्तक जन्नत व नार (नर्क) के हाल में लिखी आप की मृत्यु सन् १०५ हिजरी में हूई।

(४) उतैयह इब्ने सईद ने पाँच जिलदों में तफ़सीर क़ुरान लिखी और सन् १११ हिजरी में मृत्यु हुई।

(५) इस्माईल इब्ने अब्दुर्रहमानुस्सुद्दिलकबीर- यह प्रसिद्ध मुफ़स्सिरे कुरान हैं जिन का वर्णन समस्त इस्लामी मुफ़स्सिरीन ने सुद्दी के नाम से किया है इनकी मृत्यु सन् १२७ हिजरी में हुई।

(६) जाबिर बिन यज़ीद जुआफ़ी—इन्हों ने इमाम मुहम्मदे बाक़िर (अ० स० म०) से पचास हज़ार हदीसें सुन कर याद कीं और एक स्थान पर सत्तर हज़ार की संख्या बताई गई है। इस का वर्णनसिहाहसित्ता में से सहीमसलिम में है तफ़सीर, फ़िक्ह, और हदीस में कई पुस्तकें लिखीं। आप की मृत्यु सन् १२८ हिजरी में हुई।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(७) अम्मार इब्ने मुआविया दहनी--फ़िक़्ह में एक पुस्तक लिखी। सन् १३३ हिजरी में मरे।

(८) सालिम इब्ने अबी हफ़सा अबू यूनुस कूफ़ी-फ़िक़्ह में एक पुस्तक लिखी। सन् १३७ हिजरी में मृत्यु हुई।

(९) अबदुलमोमिन इब्ने क़ासिम अबू अबदुल्लाह अन्सारी—यह भी फ़िक़्ह में एक पुस्तक के रचयता हैं। सन् १४७ हिजरी में मरे।

(१०) अबू हमज़ा समाली-तफ़सीरे क़ुरान में एक पुस्तक लिखी इसके अतिरिक्त किताबुन्नौ और किताबुज़्ज़ुहद भी इन्हीं की रचनाएँ हैं। १५० हिजरी में मृत्यु हूई।

(११) ज़रारह इब्ने आयनः—बड़े ऊंचे विद्वान और शीया बुज़ुर्ग थे। इनकी इल्मेकलाम (धर्म-तर्क) फ़िक़्ह और हदीस में बहुत सी पुस्तकें हैं। सन् १५० हिजरी में आप का देहान्त हुआ।

(१२) मुहम्मद इब्ने मुस्लिम—यह भी उच्च श्रेणी के बुज़ुर्ग थे। इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) से तीस हज़ार हदीसें सुनीं। बहुत सी पुस्तकों के लेखक हैं जिन में से एक पुस्तक चहार सद मसअला दर अबवाब हलाल व हराम भी है। सन १५० हिजरी में आप की मृत्यु हुई।

(१३) यहिया इब्ने क़ासिम अबूबसीर असदी:—श्रेष्ठ योग्य मनुष्य थे मनासिक हज पुस्तक, किताबे यौमे दलीला लिखी सन् १५० हि० में देहान्त हुआ।

(१४) इस्हाक़े क़ुम्मी:—फ़िक्ह में एक पुस्तक के लेखक हैं।

(१५) इस्माईल इब्ने जाबिर ख़सअमी कूफ़ी ने अहादीस

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(हदीसों) की कई पुस्तकें लिखीं। एक पुस्तक फ़िक़्ह की भी लिखी।

(१६) इस्माईल इब्ने अब्दुलख़ालिक़ः—बहुत बड़े फ़िक़्ह के विद्वान थे। उन्हों ने भी एक किताब लिखी थी।

(१७) बरउलअस्काफ़िलअज़दीः—इन्हों ने फ़िक़्ह की एक पुस्तक लिखी।

(१८) हारिस इब्ने मुग़ीरा-यह भी फ़िक़्ह के मसलों की एक पुस्तक के लेखक हैं।

(१६) हुज़ैफ़ा इब्ने मनसूस खुज़ाइः—इन की भी एक पुस्तक फ़िक़्ह में थी।

(२०) हसन इब्ने सरी ने एक किताब फ़िक़्ह पर लिखी।

(२१) हुसैन इब्ने तौर इब्ने अबीफ़ाख़िता ने किताबुन्नवादिर लिखी।

(२२) हुसैन इब्ने हम्माद अबदी कूफ़ी एक पुस्तक के रचयता थे।

(२३) हुसैन इब्ने मुसअबबजलीः—इन की भी एक पुस्तक थी।

(२४) हम्माद इब्ने अबी तलहा ने एक पुस्तक लिखी।

(२५) हमज़ा इब्ने हमरान इब्ने आयन ज़रारह के भतीजे थे और एक पुस्तक के लेखक थे। यह कुछ नाम उन विद्वानों और हदीस ज्ञाताओं की बड़ी संख्या में से यहाँ दिये गए हैं जिन्हों ने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ. स. भ.) से अहलेबैत के ज्ञान को प्राप्त करके पुस्तकों में सुरक्षित कर दिया है। यह और इस के पश्चात इमाम जाफ़र सादिक़ के इमामत्त्वकाल में

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जो पुस्तकें सैकड़ों की संख्या में लिखी गई हैं यही वह पूंजी थी जिसे बाद में काफ़ी, (मन ला यहज़्र) तहज़ीब तथा इस्तबसार जैसे हदीस शास्त्र के ख़ज़ाने इकट्ठा हो सके और जिन पर शीया मत का गगन चक्कर करता रहा है।

स्वभाव, चरित्र और गुण

आप के ऊंचे स्वभाव को शत्रु भी मानते थे अतएव शाम देश का एक निवासी जो मदीने में रहता था वह बहुधा इमाम मुहम्मद बाक़िर के पास आ कर बैठा करता था और उस का कथन था कि "मुझे इस घर वालों से कोई प्रेम अथवा श्रद्धा कदापि नहीं है किन्तु आप के स्वभाव में वह आकर्षण शक्ति है कि मैं आप के पास आने और बैठने पर मजबूर हूँ"।

शासन प्रबंध के कार्यों में सलाह

इस्लामी राज वास्तव में अहलेबैत की चीज़ थी किन्तु संसार के मायवादियों ने भौतिक शक्ति के आगे सिर झुकाया और यह पावन व्यक्ति जो अहलेबैत रसूल में थे इन को शाँत तथा एकान्त जीवन व्यतीत करना पड़ा। यह स्पष्ट है कि यदि यह व्यक्ति साधारण मनुष्यों जैसे होते तो यदि राज काज में सलाह की आवश्यकता उन से पड़ती तो साफ़ इन्कार कर देते किन्तु यह लोग मनुष्यत्व के उस ऊंचे शिखर पर थे जहाँ साधारण व्यक्ति नहीं पहुँच पाते। जिस प्रकार हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब ने अपने समय की सरकार की ठीक राय देने से इन्कार नहीं किया उसी प्रकार इस कड़ी के सभी इमामों ने अपने समय के बादशाहों के साथ यही तरीक़ा राय देने का क़ायम रक्खा अतएव इमाम मुहम्मद बाक़िर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(अ०स०भ०) के समय में भी यह सूरत पेश आई। बात यह थी कि इसलामी राज्य की ओर से उस समय तक कोई मुख्य सिक्का नहीं बनाया गया था बल्कि रूमी सलतनत के सिक्के इस्लामी मुलकों में भी प्रचलित थे। वलीद इब्ने अब्दुल मलिक के काल में शाम राज्य और रोम राज्य में विरोध उतपन्न हो गया था रोम राज्य ने यह इरादा प्रकट किया कि वह अपने सिक्कों पर पैग़मबरे इस्लाम के लिए अपमान जनक शब्द खुदवा देगा इस से मुसलमानों में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। वलीद ने एक बड़ी सभा राय सलाह के लिए बुलाई जिस में इसलामी दुनिया के बड़े बड़े व्यक्ति बुलाए गये। इस सभा में इमाम मुहम्मद बाक़िर भी थे और आप ने यह राय दी कि मुसलमानों को स्वयं अपना सिक्का ढालना चाहिए जिस में एक ओर ला इलाहा इल्लल्लाह और दूसरी ओर मुहम्मदुर रसूलिल्लाह खुदा हुआ हो। इमाम की इस राय को सभों ने स्वीकार कर लिया और इस्लामी सिक्का इसी प्रकार तैयार हो गया।

उमवी सरकार की ओर से रोक थाम

हालांकि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) मुलकी मामलों में कोई भाग न लेते थे और यदि कुछ कहा भी तो सरकार के इच्छानुसार इस्लामी यश को क़ायम रखने और बाक़ी रखने के लिये। किन्तु आप का शांत तथा विद्यात्मक जीवन और अध्यात्मिक केन्द्रता भी ततकाल सरकार को खटकती थी अतएव हिशाम इब्ने अब्दुल मलिक ने मदीने के हाकिम को पत्र लिखा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को उन के पुत्र हज़रत जाफ़रे सादिक़ के साथ दमिश्क़ भेज दिया जाये वह यह चाहता था कि इस प्रकार आप के यश और आदर को

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

वह धक्का पहुँचा सकेगा। और जब यह लोग दमिश्क़ पहुँचे तो तीन दिन तक हिशाम ने मुलाक़ात का अवसर नहीं दिया चौथे दिन दरबार में बुला भेजा। वह ऐसा समय था कि वह दरबार में राज सिंहासन पर बैठा हुआ था। और दाहने तथा बायें सेना के लोग हथियार लगाए खड़े थे और दरबार के बीच में एक निशाना तीर फेंकने का मुक़र्रर किया गया था और सलतनत के अमीर उस के सामने शर्त बांध कर तीर लगाते थे। इमाम (अ० स० अ०) के पहुँचने पर उस ने बड़े साहस के साथ इच्छा की कि आप भी इन लोगों के साथ तीर लगाएँ हालांकि हज़रत ने बहुत क्षमा चाही किन्तु उस बादशाह ने नहीं माना वह समझता था कि आले मुहम्मद बहुत दिनों से अलग थलग जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन को संग्राम विद्या से क्या लगाव और इस प्रकार वह यह चाहता था कि लोग इन इमामों पर हँसें किन्तु उसे यह पता न था कि इनमें से प्रत्येक के बाहु में अली की शक्ति और हृदय में हुसैन की ताक़त मौजूद है। वह केवल अल्लाह के आदेश तथा कर्तव्य पालन की भावना हैं जिस के कारण यह लोग शांति की मूर्ति प्रतीत होते हैं। यही हुआ कि जब विवश होकर हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर ने तीर और कमान हाथ में लिया और कुछ तीर बारी बारी से एक ही निशाने एक ही बिन्दु पर लगाए तो सब लोग आश्चर्य में पड़ गए और सब ओर से प्रशंसा होने लगी। हिशाम को अपने इस किए पर लज्जित होना पड़ा। इस के पश्चात हज़रत से इमामत्त्व और ख़िलाफ़त की समस्या और अहलेबैत के गुणों पर वार्तालाप होने लगा। जिस के बाद उस बादशाह (हिशाम) को यह महसूस हुआ कि ऐसा न हो कि इमाम का दमिश्क़ में रहना साधारण जनता के हृदय में अहलेबैत की श्रेष्ठता स्थापित

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

कर देने का कारण बन जाए। इस लिये उस ने आप को मदीना लौट जाने की आज्ञा दी किन्तु दिल में इमाम से और अधिक जलने लगा।

मृत्यु

ज्यों ज्यों शाम सरकार को इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) की बड़ाई, श्रेष्ठता, गौरव तथा पवित्रता का अनुमान अधिक होने लगा, आप का जीवन उस की आंखों में खटकने लगा। अन्त में आप को उस शांत शस्त्र अर्थात विष से जो बहुधा शाम सरकार (बनी उमैया) की ओर से काम में लाया जाता रहा था, शहीद करने का उपाय कर लिया गया। वह एक ज़ीन का तुहफ़ा था जिस में विशेष उपाय द्वारा विष छिपा दिया गया था और जब हज़रत उस ज़ीन पर सवार हुए तो विष आप के शरीर में फैल गया कुछ दिन बड़ी बेचैनी के साथ बीमारी के बिछौने पर गुज़रने के पश्चात ७, ज़िलहिज्जा सन् ११४ हि० में ५७ वर्ष की आयु में आप की मृत्यु हुई।

आप की वसीयत के अनुसार आप को तीन कपड़ों का कफ़न दिया गया जिन में से एक वह यमनी चद्दर थी जिसे ओढ़ कर आप जुमा के दिन नमाज़ पढ़ते थे और एक वह कपड़ा था जिसे आप सदा पहने रहते थे और जन्नतुलबक़ी में उसी क़ुब्बे में जहां हज़रत इमाम हसन (अ० स० भ०) और इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ० स० भ०) दफ़न हो चुके थे हज़रत भी दफ़न किये गये।

अ० स० भ० = अल्लाह उन पर सलाम भेजे।

मुद्रक :—डायमन्ड प्रेस, १०३ शाहगंज, इलाहाबाद।
Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन लखनऊ

यह मिशन सन् १९३२ ई० में स्थापित हुआ था। यह मिशन वास्तविक इस्लाम के साहित्य का प्रकाशन करता है तथा इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों में बिना मूल्य लिये अपनी पुस्तकों को वितरित करता है। इस मिशन की सहायता सदस्यता पुस्तकों के क्रय एवं अनुदान के द्वारा की जा सकती है।

सदस्यता के शुल्कों की सूची निम्नलिखित है।

१-	विशेष अनुदान देने वालों के लिये	५००)	एक बार में
२-	संरक्षक	१००)	,, ,,
३-	जीवन सदस्य	५०)	,, ,,
४-	विशेष सदस्य	५)	वार्षिक
५-	साधारण सदस्य	१)	,,

टिप्पणी :- १- विशेष अनुदान देने वाले एवं संरक्षक मिशन के नये तथा पुराने प्रकाशन बिना मूल्य लिये प्राप्त कर सकेंगे।

२- जीवन सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे तथा उसके पूर्व के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं।

३- विशेष सदस्य अपने सदस्य होने के उपरान्त सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४- साधारण सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकेंगे।

अवैतनिक सचिव
इमामिया मिशन
नखास, लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इस्लाम की शिक्षा के जीते जागते उदाहरण हजरत मुहम्मद साहब तथा उनकी आदर्शमय जीवन यापन करने वाली सन्तानों की जीवनियाँ ।

१—शान्ति सनदेशद
२— स्वर्ग बाला
३ —अशान्तात्मा
४ —शान्ति-स्रोत
५—अमर संतानी
६—धैर्य सागर
७—ज्ञान भानु
८—सत्यास्तम्भ
९—संयम शिखर
१०—सर्वमान्य अली
११—धर्मोद्गम
१२—महातपस्वी बन्दी
१३—विजयी कारागृही
१४—अंतिम पथ-प्रदर्शक

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।) तथा डाक व्यय =)

मिलने का पताः—

आनरेरी सिक्रैटरी
इमामिया मिशन
लखनऊ
(भारत वर्ष)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

विश्वगुरु

द्गुरु कबीर साहिब का मानव संदेश

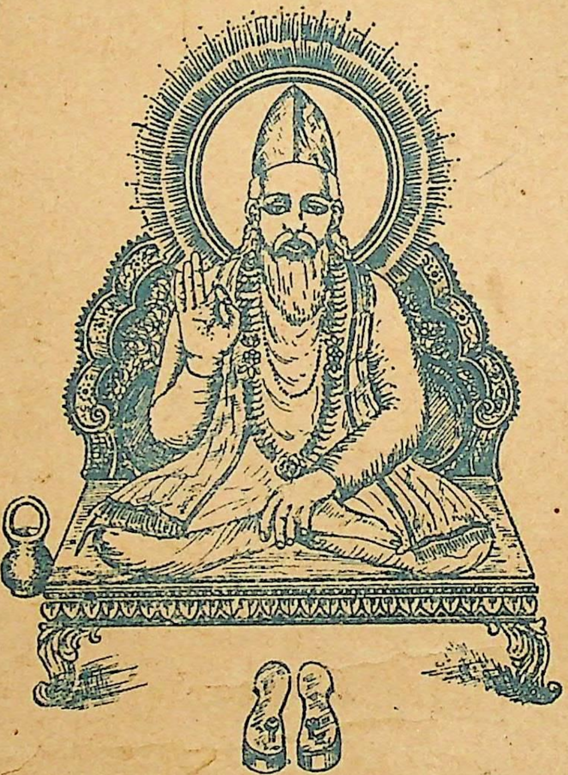

द्वि

सदगुरु कबीर साहिब

समाज

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

विश्वगुरु

सद्‌गुरु कबीर साहिब
का
मानव सन्देश

लेखक—
महन्त वंसूदास कबीरपन्थी मादक-निषेध-प्रचारक,
परमट, कानपुर

प्रकाशक—
श्री सद्धर्मप्रचारक कबीर-सभा, कानपुर

द्वितीय संस्करण १००० १९५९ मूल्य ।।)

मुद्रक—श्रीचंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु
समाज-सेवा प्रेस, सआदतगंज रोड, लखनऊ

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

भूमिका

यह सभी लोग मानते-जानते हैं कि सदगुरु कबीर साहिब वर्णव्यवस्था (मनुष्य-कृत जाति-पाँति) को नहीं मानते थे। इसकी पुष्टि के लिए सदगुरु कबीर साहिब की वाणी के अतिरिक्त सब से अच्छा प्रमाण महात्मा नाभाजी का है (महात्मा नाभा जी स्वामी रामानन्दजी के शिष्य और सदगुरु कबीर साहिब के गुरुभाई थे) जो सदगुरु कबीर साहिब के सामने थे। उन्होंने सदगुरु कबीर साहिब के उपदेशों को देखा-सुना था। उन महात्मा जी ने अपने "भक्तमाल" नाम के ग्रन्थ में लिखा है कि—

कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम खट दरशनी ॥
भक्तिविमुख जो धरम, सो अधरम करि गायो।
जोग जग्य व्रत दान, भजन बिनु तुच्छ दिखायो ॥
हिन्दू तुरुक प्रमान, रमैनी शब्द औ साखी।
पच्छपात नहीं बचन, सब ही के हित की भाखी ॥
आरूढ़ दशा होय जगत पर, मुख देखि नाहिंन भनी।
कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम खट दरशनी ॥

इस प्रकार आज से पाँच सौ वर्ष पहिले वर्ण और आश्रम की मर्यादा को मिटाकर, समानता का उपदेश दिया था। विश्व-बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया था। सब के लिए समान अधिकार का प्रतिपादन किया था।

आप आदिसंदेश के देनेवाले, सन्तमत के संस्थापक, हिन्दू-

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

मुस्लिम एकता एवं छुआछूत-आन्दोलन के आदि-प्रवर्तक, राष्ट्रीयता के निर्माता और हिन्दी-सन्तसाहित्य के आदिकवि थे।

आप स्वतः सिद्ध नैसर्गिक कवि (स्वाभाविक कवि) और आशुकवि (तत्काल कविता करनेवाले) थे। आपकी वाणी में वर्ण-व्यवस्था जाति-पाँति खंडन की युक्ति बहुत ही बढ़िया है, जिसे देखकर दंग हो जाना पड़ता है। ईश्वर-कृत मनुष्य-जाति मंडन की शैली मनमोहक है। आपकी वाणी पक्षपात से रहित है। आपने किसी की मुँहदेखी नहीं कही है, इसलिए आपकी वाणी में जादू भरा आकर्षण है। आपकी वाणी कृत्रिम जातिवाद की बढ़ती हुई अग्नि को शान्त करनेवाली है । द्वेष को मिटाकर प्रेम उत्पन्न करनेवाली है। इसी उद्देश्य से आपकी वाणियों का संग्रह कर यह पुस्तक लिखी है। इससे व्यक्ति, समाज, देश और विश्व का कल्याण होगा।

सदगुरु कबीर साहिब के विचारों को अच्छी तरह समझने के लिए, पद्य के अतिरिक्त जहाँ-तहाँ सदगुरु कबीर-ब्राह्मण-काजी संवाद लिख दिया है, वह मेरी ओर से है।

—लेखक

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ समर्पण ❀

यह लघु ग्रन्थ कबीर-साहित्य के मर्मज्ञ तथा जीर्णोद्धारक सत्यलोकवासी भारतपथिक श्री १०८ स्वामी श्रीयुगलानन्द बिहारी कबीरपन्थी की स्मृति में लिखकर—

कबीर-पंथ-प्रभाकर श्री १०८ गोस्वामी नारायणदासजी साहिब व्याख्यानवाचस्पति, अनेक स्वर्णपदक प्राप्त, भरतपुर के करकमलों में सादर समर्पित।

दिनांक
१६–११–५४

महन्त बंसूदास कबीरपन्थी
मादक-निषेध-प्रचारक
कानपुर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सत्यनाम

विश्वगुरु

सदगुरु कबीर साहिब

का

मानव सन्देश

❀ अथ मङ्गलाचरण ❀

दोहा--सतसुकृत अचिन्तगुरू, योगजीत सतनाम ।
करुणामय कब्बीर हो, पूरण मंगल-धाम ॥
गुरुओं में हो आदिगुरु, सन्देशी में आदि ।
आदि सन्देश सुनाइयाँ, देखि परै सब वादि ॥
नाना विधि उपदेश दे, जग कल्याण के हेत ।
तिन में एक बखानहूँ, "चंसू" होवै चेत ॥
वह मानव उपदेश है, निरविवाद निरपच्छ ।
सब के मानन योग है, कितना बढ़िया स्वच्छ ॥
सोई लिखना चहत हूँ, सदगुरु करो सहाय ।
कोटि कोटि प्रणाम है, "चंसू" मस्तक नाय ॥

भारतवर्ष में वर्ण-व्यवस्था का पुराना झगड़ा तो था ही, किन्तु हिन्दू-मुसलमान के झगड़ा ने और भी अशान्ति उत्पन्न

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

कर दी। उपर्युक्त झगड़ा को देखकर आदिसन्देशी सदगुरु कवीर साहिब, एक दिन काशी की चौक में खड़े होकर उपदेश देने लगे। सब से पहिले उन्होंने आदिसन्देश से भरा हुआ एक शब्द गाया।

* शब्द *

आदिसन्देश

जहवाँ से आयो अमर वह देसवा ॥ टेक ॥
ब्राह्मण नाहीं छत्री नाहीं, सूद्र न बयसवा ।
मोगल औ पठान नाहीं, सइयद न सेखवा ॥ १ ॥
जोगी नाहीं जंगम नाहीं, मूनी दरबेसवा ।
आदि अन्त मध्य नाहीं, गौरी गनेसवा ॥ २ ॥
ब्रह्मा नाहीं विष्णू नाहीं, नाहीं महेसवा ।
अष्टंगी नीरंजन नाहीं, नाहीं है सेसवा ॥ ३ ॥
पानी नाहीं पवनौ नाहीं, न धरती अकसवा ।
चान्द और सूरज नाहीं, न रैन दिवसवा ॥ ४ ॥
कहँहिं कबीर तहाँ से हम, लाये यक सन्देसवा ।
सारसबद*को गहि करके, चलो वही देसवा ॥ ५ ॥

---

* सारशब्द की परिभाषा

सदगुरु कवीर साहिब के उद्देश्य-विधेय दोनों को सारशब्द कहते हैं।

उद्देश्य—जिसके विषय में कुछ कहा जाय, उसे उद्देश्य कहते हैं।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अर्थ—मनुष्य कहलानेवालो ! तुम सबके सब जहाँ से अर्थात् जिस देश से आये हो, वह देश अमर है।

उस अमर देश में न ब्राह्मण हैं, न क्षत्री हैं, न वैश्य हैं,

विधेय—जो कुछ कहा जाय, उसे विधेय कहते हैं।

उद्देश्य सारशब्द

चौपाई—सारशब्द विदेह स्वरूपा,
निह अक्षर वह रूप अनूपा।

—अनुरागसागर

अर्थ—सारशब्द विदेह स्वरूप है। वह रूप अनूप (उपमा से रहित) है। वह निहअक्षर है।

[प्रकृति जड़ अथवा माया क्षर है। जीव, सगुण ईश्वर (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) और निर्गुण ईश्वर (निरंजन), ये सब अक्षर हैं। आदि पुरुष निहअक्षर है।]

विधेय सारशब्द

लौकिक शब्द, पश्चिमी चार किताबों के शब्द और पूर्वी चार वेदों के शब्द, इन सब शब्दों में सदगुरु कबीर साहिब का शब्द सार है, जैसे ऊँख में रस, धान में चावल और दूध में घी इत्यादि। इसलिए उसे सारशब्द कहते हैं।

उसमें गुण है कि परीक्षापूर्वक विधि-निषेध का निर्णय करके जीवों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश, महामाया अष्टांगी और निरंजन के परे, आदिपुरुष और अमरलोक का उपदेश करना, जैसे—

अर्द्ध साखी—जासों नाता आदि का,
बिसरि गया सो ठौर।

—बीजक

Channel eGangotri Urdu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

न शूद्र हैं, न मुगल हैं, न पठान हैं, न सैय्यद हैं और न शेख़ हैं। (१)

उसमें न योगी हैं, न जंगम हैं, न मुनि हैं और न दर्वेश हैं। उसकी न आदि है, न मध्य है और न अन्त है भावार्थ इनसे रहित है। उसमें पारवती और गणेश नहीं हैं। (२)

विधेय सारशब्द महानिर्णायक है। उसे जो जीव श्रद्धा और प्रेम से हृदय में धारण कर मनन करता है, उसका कल्याण हो जाता है। निर्णायक होने के कारण महात्मा रामरहस्यजी साहिब, उसका नाम "निर्णय" बतला गये हैं, जैसे—

चौपाई—सारशब्द निर्णय का नामा,
जाते होय जीव का कामा।

—मानुष विचार पंचग्रन्थी

इसी को "चौधाराशब्द" भी कहा जाता है, जैसे—

चौपाई—कहन सुनन को शब्द चौधारा,
सार शब्द सों जीव उबारा।

—अनुरागसागर

इसी को "स्वसंवेद" भी कहते हैं। सदगुरु कबीर साहिब कह गये हैं कि—

साखी—वेद हमारा भेद है, हम हैं वेद के माँहि।
जौन वेद में हम बसैं, वेदौ जानत नाँहि॥

—आगमनिगमबोध

अर्थ—सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि स्वसंवेद मेरा ज्ञान

Channel eGangotri Urdu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

उसमें सगुण अपरब्रह्म न ब्रह्मा है, न विष्णु हैं और न महेश हैं। न महामाया आदिजोति अष्टांगी है, न पारब्रह्म (परब्रह्म) निर्गुण निरंजन है और न शेषनाग हैं। इसका भाव यह है कि सगुण-निर्गुण सोपाधिक-ब्रह्म, सृष्टि के अधिकारी पुरुष हैं, शुद्ध चैतन्य नहीं। (३)

है। मैं स्वसंवेद में रहता हूँ। जिस स्वसंवेद (परा विद्या) में मैं निवास करता हूँ, उसे चारो वेद (अपरा विद्या) नहीं जानते हैं।

इसी विधेय वाणी को सदगुरु कबीर साहिब के उत्तराधिकारी और कबीरपन्थ के प्रथमाचार्य धर्मदासजी साहिब लोक-वेद से न्यारी बतला गये हैं, जैसे—

❊ दादरा ❊

कोइ समुझै ब्रह्मज्ञानी, मेरे सतगुरु की वानी। टेक।
क्या समुझैं वै वेद के वक्ता, विद्या के अभिमानी।
यदपि दिखत कछु अर्थ असंगत, तदपि प्रबोध की खानी।
लोक वेद से है वह न्यारी, त्रिगुण रहित निरबानी।
साधु सन्त सब शीश चढ़ावें, महामन्त्र सम जानी।
'धर्मिनि' के तो परम शिरोमणि, पाय भई पटरानी।

—कबीर संगीत रत्नमाला

इस विधेय सारशब्द का सार है, उद्देश्य सारशब्द। उद्देश्य सारशब्द का अर्थ है, आदिब्रह्म अथवा आदिपुरुष निहअच्छर। आदिपुरुष उसे इसलिये कहते हैं कि निरंजन इत्यादि सोलह सुतों के पहिले था, है और रहेगा।

कबीर साहित्य में ब्रह्म को शब्द भी कहा जाता है। ब्रह्म

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

उसमें न पानी है, न पवन है, न पृथ्वी है और न आकाश है भावार्थ पाँच-तत्व नहीं हैं। उसमें न चन्द्र है, न सूर्य है, न रात है और न दिन है। (४)

सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि मैं तहाँ से अर्थात् उसी अमर देश (सत्यलोक) से सारशब्द एक संदेश लेकर आया हूँ। सारशब्द आदिपुरुष को बतलाता है, आप लोगों के आदि अमर स्वरूप को बतलाता है, (जिसको भूलकर अब छठवें स्थूल शरीर में हो) और अमरलोक को बतलाता है, जहाँ के रहनेवाले हो। मेरे सारशब्द को ग्रहण करके फिर अपने उसी अमर देश को चलो। (५)

(सत्यलोक दो हैं। एक सत्यलोक सातस्वर्गों के अन्तर्गत, तीनलोक के भीतर, पाँचतत्व तीनगुण मायाकृत सृष्टि में है और

विष्णु महेश सगुण ब्रह्म कहलाते हैं और निरंजन निर्गुण ब्रह्म कहलाता है। निरंजन को निर्गुण ब्रह्म इसलिये कहते हैं कि इसकी उत्पत्ति माया के सत रज तम गुणों से नहीं हुई है, बल्कि सीधे आदिपुरुष से हुई है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पत्ति माया के सत रज तम गुणों से हुई है। इन सगुण-निर्गुण ब्रह्मों में जो सार है, वह आदिपुरुष या आदिब्रह्म (सारशब्द अर्थात् सारब्रह्म) है। इसी आदिब्रह्म (शब्द) से प्रथम ब्रह्मसृष्टि हुई थी, यथा—

चौपाई-शब्दहि ते भयो सुतन अकारा, शब्द ते लोक द्वीप बिस्तारा।

—अनुरागसागर

सोलह सुतों की उत्पत्ति को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
नाशमान है। दूसरा सत्यलोक सद्गुरु कबीर साहिब का बतलाया हुआ है, जो तीन लोक के बाहर, पाँचतत्व तीनगुण मायाकृत सृष्टि में नहीं है और अविनाशी है)

साखी—आये एकहि देस से, उतरे एकहि घाट।
हवा लगी संसार की, हो गये बाराबाट ॥

अर्थ—सब से पहिले तुम सब एक देश से अर्थात् अमर देश से अपने अमर स्वरूप को भूलकर आये। जब स्थूल सृष्टि हुई, चौरासी लाख योनियाँ बनीं, तब उनमें मनुष्य सब एकहि घाट (एक ही रास्ता या मातृयोनि) से उतरे अर्थात् जन्मे या उत्पन्न हुए भावार्थ अलग-अलग रास्ते से नहीं, जैसा कि लोग ब्रह्मा के मुख, हाथ, जाँघ और पैर से बतलाते हैं और अब भी सब एक ही रास्ता (मातृयोनि) से उत्पन्न हो रहे हैं। इस बात को न जानकर संसार की हवा लगने से, तुम सब ब्रह्मा के चार अङ्गों से चार वर्ण की उत्पत्ति मानकर, आपस में लड़-झगड़कर बरबाद हो गये हो और हो रहे हो।

इस प्रकार सद्गुरु कबीर साहिब के उपदेश को सुनकर एक ब्राह्मण से नहीं रहा गया। वह सद्गुरु कबीर साहिब के सामने आकर बोला—

ब्राह्मण—क्यों कबीरजी ! आपने अभी जो वेद-शास्त्र के विरुद्ध उपदेश दिया है, क्या आप वेद-शास्त्र को नहीं मानते हैं ? देखिए, यजुर्वेद ३१ वें अध्याय का ११ वाँ मंत्र है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इसका अर्थ यह है कि ईश्वर ने अपने मुखसे ब्राह्मणों को, हाथ से क्षत्रियों को, जाँघ से वैश्यों को और पैर से शूद्रों को उत्पन्न किया।

यही बात मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ३१ में लिखी हुई है:—

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्॥

अर्थ—सम्पूर्ण सृष्टि की वृद्धि के निमित्त भगवान ने स्वयं निज मुखारविन्द से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्री, जाँघ से वैश्य और पैर से शूद्र की रचना की।

इस प्रकार वेदशास्त्र में बहुत प्रमाण रहते हुए भी, तुम कहते हो कि सब एक ही रास्ता से उत्पन्न हुए।

इस प्रकार ब्राह्मण की बात सुनकर सदगुरु कबीर साहिब ने उत्तर दिया—

सदगुरु कबीर—सुनिये ब्राह्मणजी! वेद-शात्र की बातें उतनी ही मानी जायँगी, जितनी सत्य अथवा यथार्थ और आप्तकृत होंगी। वे बातें नहीं मानी जायँगी जो ईश्वर, वेद और शास्त्र की ओट में संसार तथा शूद्र कहलाने वाली जाति को धोखा देकर, द्विजजाति के स्वार्थ को पूर्त्ति के लिये रची गई हैं। वर्णव्यवस्था ऐसा ही लक्ष्य रखकर बनाई गई है। इसलिये ब्राह्मणजी! मैं तुम्हें सत्य उपदेश देता हूँ कि चारवर्ण ईश्वर के बनाये हुए नहीं हैं, मनुष्य के बनाये हुए हैं। ईश्वर ने तो केवल मनुष्य-जाति बनाई है।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

मेरे सामने उस प्रमाण को रखो जो ईश्वर का बनाया हो, अपने स्वार्थमय बनाये हुए यथार्थसत्य-रहित श्लोक नहीं। देखो, मैंने तुम्हारे सामने उस प्रमाण को रखा है, जिस कल (यंत्र, मशीन) को ईश्वर ने बनाया है, जो भग अथवा मातृयोनि के नाम से संसार में प्रसिद्ध है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। एक बार फिर सुन लो, जिससे अच्छी तरह याद हो जाय कि—

साखी—पाँच तत्व का पूतरा, रज बीरज की बूँद।
एकै घाटी नीसरा, ब्राह्मण क्षत्री सूद॥

इतना यथार्थसत्य प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर भी, यदि तुम नहीं मानते हो, तो—

रमैनी—जो तुम ब्राह्मन ब्राह्मनि जाये,
अवर राह ते काहे न आये।

अर्थ—यदि तुम ब्राह्मण हो और ब्राह्मणी से उत्पन्न हुए हो, तो अवर राह अर्थात् मुँह से क्यों नहीं उत्पन्न हुए? जिसकी इतनी गीत गाते हो। मातृयोनि से क्यों उत्पन्न होते हो?

इसलिये ब्राह्मणजी! मुख, हाथ, जाँघ और पैर से उत्पन्न होने की बात मिथ्या है।

ब्राह्मण—यदि तुम ईश्वर के मुख, हाथ, जाँघ और पैर से चार वर्णों की उत्पत्ति न मानकर मातृयोनि से मानते हो, तो यह उत्पत्ति मनुष्य-जाति के उत्पन्न होने पर लोग मातृयोनि से उत्पन्न होते हैं, मगर जब मनुष्य नहीं थे, तब सबसे पहिले सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य किससे उत्पन्न हुए थे? तब तो मातृयोनि थी नहीं।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सद्गुरु कबीर—जिसके मुख, हाथ, जाँघ और पैर से चार वर्णों की उत्पत्ति मानते हो, तो यदि उसके चार अङ्ग मुख, हाथ, जाँघ और पैर थे, तो शरीर भी होगा। वह शरीर किससे उत्पन्न हुआ था ?

ब्राह्मण—सुनिये कबीरजी ! मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ८-९ में लिखा है कि—

सोऽभिध्याय शरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः ।
अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् ॥

अर्थ—अपने शरीर से विविध विधि के जीवों के सिरजन के इच्छुक परमेश्वर ने, केवल इच्छामात्र करते ही सर्व प्रथम अप (जल) की ही सृष्टि की और उसमें अपनी सामर्थ्य सत्ता (बीज) स्थापित कर दी।

तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम् ।
तस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥

अथ—वह बीज सूर्य की कान्ति सदृश (प्रकाशपुंज युक्त) सुवर्ण का एक अण्ड (अण्डा) बन गया और अण्डा में अखिल लोक निर्माता विधाता (ब्रह्मा) स्वयं उत्पन्न हुए।

सद्गुरु कबीर—परमेश्वर की जिस इच्छा से पहिले जल की सृष्टि हुई और परमेश्वर ने उसमें अपना बीज रख दिया। उस बीज से एक अण्डा बन गया और उसमें ब्रह्मा उत्पन्न हुए, तो जिस इच्छा से जल से लेकर ब्रह्मा तक उत्पन्न हुए, उसी इच्छा से उसने अपना शरीर भी बनाया होगा।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इच्छा ही से सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा से मनुष्य हुए, यथा—

साखी—बिधि की इच्छा ते भई, पहिले मानुष जात।
हाथ पाँव मुख जाँघते, झूठी जानो बात॥

ब्राह्मणजी! वास्तव में मनुष्य कहलाने योग्य वही है, जो मिथ्या बात के पक्ष को छोड़कर सत्यबात ग्रहण करता है। सृष्टि की आदि में भी सब एक ही रास्ता इच्छा से उत्पन्न हुए और अब भी सब एक ही रास्ता मातृयोनि से उत्पन्न होते हैं। मुख, हाथ, जाँघ और पैर से मनुष्य-जाति उत्पन्न होने की बात मिथ्या समझो।

ब्राह्मण—अच्छा तो मुख, हाथ, जाँघ और पैर से मनुष्य जाति की उत्पत्ति नहीं मानते हो, तो इसको मानोगे कि नहीं? सुनो—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विजोच्यते।
वेदपाठी भवेद् विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः॥

अर्थ—जन्म से सब शूद्र उत्पन्न होते हैं और जनेऊ-संस्कार करने से द्विज (दूसरा जन्म होना) कहलाते हैं। वेद के पाठी होने से विप्र होता है और ब्रह्म के जानने से ब्राह्मण होता है।

सदगुरु कबीर—ब्राह्मणजी! जन्म से सब मनुष्य उत्पन्न होते हैं, शूद्र नहीं, यह सारा संसार जानता है। जन्म से शूद्र वंचक (धोखा देनेवाले) लोग बतलाते हैं, यथा—

साखी—जन्म ते मानुष होत सब, यह जानत संसार।
वंचक सूद बतावहीं, कहैं कबीर पुकार॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ब्राह्मण—यदि उपर्युक्त बातों को नहीं मानते हो, तो गीता की बात तो मानना ही चाहिए, क्योंकि गीता में गुण-कर्म के विभाग से भगवान द्वारा चारवर्ण की उत्पत्ति का वर्णन है। सुनिए,

अध्याय ४ श्लोक १३ में लिखा है कि--

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥

अर्थ—हे अर्जुन! गुण और कर्मों के विभाग से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र मेरे द्वारा रचे गये हैं। उनके कर्त्ता को भी मुझ अविनाशी परमेश्वर को तू अकर्त्ता ही जान।

इसका साफ़-साफ़ अर्थ इस तरह समझिए कि जिन जीवों के उत्तम गुण-कर्म थे, उनको ईश्वर ने ब्राह्मण बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको क्षत्री बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको वैश्य बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको शूद्र बनाया और अब भी बनाता है।

सदगुरु कबीर—सुनिए ब्राह्मणजी! उत्तम गुण-कर्म का फल सुख होता है और नीच गुण-कर्म का फल दुख होता है। यह बात निर्विवाद शास्त्र और सर्व सम्मत है। इस निर्णय के अनुसार जिन जीवों के उत्तम गुण-कर्म थे, उन्हें ईश्वर ने ब्राह्मण बनाया है, तो ब्राह्मणों को सबसे अधिक सुख होना चाहिए। ब्राह्मणों से कम सुख क्षत्रियों को होना चाहिए। क्षत्रियों से कम सुख वैश्यों को होना चाहिए। वैश्यों से कम सुख शूद्रों को होना

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

चाहिए, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। लाखों ब्राह्मण अनेक प्रकार के दुखों से त्राहि-त्राहि कर रहे हैं और लाखों शूद्र अनेक प्रकार के सुख भोग रहे हैं, जिन्हें देखकर ब्राह्मणों की लार टपक रही है। कैसे माना जाय कि गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर ने चारवर्ण बनाया था और अब भी बनाता है।

और भी सुनिए, पूर्व-जन्म के उत्तम गुण-कर्म के संस्कार से सब ब्राह्मणों में उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव भी होना चाहिए। ब्राह्मणों से कम गुण-कर्म-स्वभाव क्षत्रियों में होना चाहिए। क्षत्रियों से कम गुण-कर्म-स्वभाव वैश्यों में होना चाहिए। वैश्यों से कम गुण-कर्म-स्वभाव शूद्रों में होना चाहिए, किन्तु ऐसा भी देखने में नहीं आता है।

अब ईश्वर के बनाये हुए गुण-कर्म के विभाग से वर्ण सुनिए, जिन जीवों के उत्तम गुण-कर्म थे, उनको मनुष्य बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको पशु बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको पक्षी बनाया। उनसे गिरे हुए जिन जीवों के गुण-कर्म थे, उनको कीड़ा-मकोड़ा बनाया।

मनुष्य-खानि में आये हुए जीवों के उत्तम गुण-कर्म होने के कारण, जो सुख मनुष्यों को है, वह सुख पशुओं को नहीं है। जो सुख पशुओं को है, वह सुख पक्षियों को नहीं है। जो सुख पक्षियों को है, वह सुख कीड़ा-मकोड़ों को नहीं है।

पूर्व-जन्म के उत्तम गुण-कर्म के संस्कार से, मनुष्यों में उत्तम

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

गुण-कर्म-स्वभाव हैं, वे गुण-कर्म-स्वभाव पशुओं में नहीं हैं। जो गुण-कर्म-स्वभाव पशुओं में हैं, वे गुण-कर्म-स्वभाव पक्षियों में नहीं हैं। जो गुण-कर्म-स्वभाव पक्षियों में हैं, वे गुण-कर्म-स्वभाव कीड़ा-मकोड़ों में नहीं हैं।

ये सब गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर के बनाये हुए वर्णों में, सुख तथा गुण-कर्म-स्वभाव सृष्टि की आदि से आज तक, प्राकृतिक (कुदरती) जन्म से होते हैं, कोई अन्तर नहीं पड़ता है। क्या इस प्रकार स्वभावत: जन्म से सुख, गुण-कर्म-स्वभाव ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र में हैं? नहीं।

इसलिये ब्राह्मणजी! चारवर्ण ईश्वर के बनाये हुए नहीं हैं। मैं पुकार के कहता हूँ कि चारवर्ण ब्राह्मणों का बनाया हुआ जाल है, यथा—

साखी—गुन कर्म वखरा से कहैं, ईस वरन रच चार।
है दुज जाल न ईस रच, कहहिं कबीर पुकार॥
ईस बनाई जगत में, मनुष जाति है एक।
पीटि ढिंढोरा कहत हूँ, सत-मत सहित विवेक॥

ब्राह्मणजी! सब से हँसी की बात तो यह है कि अभी तक जितने प्रमाण तुमने मेरे सामने रखे हैं, इनमें कोई यथार्थसत्य नहीं और सब एक दूसरे के विरुद्ध हैं। कोई प्रमाण अटल सिद्धान्त से भरे हुए नहीं हैं, जैसे मैंने तुम्हारे सामने मातृयोनि और इच्छा के प्रमाण रखे हैं। तुम कभी कहते हो ईश्वर के मुख,

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

हाथ, जाँघ और पैर से चारवर्ण (जाति) की उत्पत्ति हुई। कभी कहते हो जन्म से सब शूद्र होते हैं और जनेऊ-संस्कार से द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य होते हैं। अब कहते हो गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर द्वारा चारवर्ण रचे गये हैं, इनमें कौन सत्य है ?

यदि ईश्वर के चारअंग से चारवर्ण की उत्पत्ति मानी जाय, तो जन्म से शूद्र और जनेऊ-संस्कार से द्विज होना तथा गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर द्वारा चारवर्ण का होना मिथ्या होता है।

यदि जन्म से शूद्र और जनेऊ-संस्कार से द्विज होना माना जाय, तो ईश्वर के चारअंग से चारवर्ण की उत्पत्ति तथा गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर द्वारा चारवर्ण उत्पन्न होना मिथ्या होता है।

यदि गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर द्वारा चारवर्ण की उत्पत्ति का होना माना जाय, तो ईश्वर के चारअंग से चारवर्ण की उत्पत्ति का होना तथा जन्म से शूद्र और जनेऊ-संस्कार से द्विज होना मिथ्या होता है। अब इनकी सत्यता तुम्हीं समझो।

ये सब प्रमाण धर्मशास्त्र और ईश्वर के ओट में ब्राह्मणों की गढ़ी हुई वाक्य माया है, जैसे—

रमैनी-ब्राह्मनकीन्ह्यो ग्रन्थपुराना, कैसहुकै मोहि मानुष जाना।
ब्राह्मनही सब कीन्हा चोरी, ब्राह्मन ही को लागल खोरी।
पाप पुन्य के हाथहिपासा, मारि जगत का कीन्ह विनासा।

देखो, ब्राह्मण जाति से उत्पन्न महर्षि कश्यप के पुत्र बावन ने जो छल किया है, वह संसार में प्रसिद्ध है, जैसे—

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

रमैनी-बावनरूपछलेउबलिराजा, ब्राह्मनकीन्हकवनकोकाजा।

ब्राह्मण—सुनिये, कबीरजी ! यदि ईश्वर ने चारवर्ण न बनाये होते, तो आज जो भेद देख पड़ता है यह न होता। देखो, द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य विद्वान, धर्मवान, धनवान, बुद्धिमान, राजा-महाराजा, सेठ-साहूकार, बड़े-बड़े व्यापारी, आचारी-विचारी, योगी, आत्मज्ञानी और ब्रह्मज्ञानी इत्यादि हुए और हैं। इसके विपरीत शूद्रों, अतिशूद्रों में विद्याहीन, धर्महीन, आचारहीन मैले-कुचैले, विचारशून्य, बुद्धि से हीन होने के कारण व्यापार नहीं कर सकते, फिर योगी, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, सेठ-साहूकार और राजा-महाराजा होने की बात तो दूर की है। "पड़े रहैं झोपड़ी में महल के देखैं ख्वाब" वाली बात है। ये सब गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर की देन नहीं तो है क्या ?

सद्गुरु कबीर—ब्राह्मणजी ! उपर्युक्त बातें जो तुमने बतलाई हैं, गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर की देन नहीं हैं, बल्कि तुम्हारे स्वार्थमय वर्णव्यवस्था धार्मिक विधान के कारण से हैं। सुनिए,

स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति ।

इसका अर्थ है स्त्री और शूद्र न पढ़ैं।

इस प्रकार विधान (कानून) बनाकर तुम लोगों ने शूद्रों को पढ़ने नहीं दिया, जिससे शूद्र-अतिशूद्र जातियाँ विद्या से हीन हुईं। अब बतलाइए, इन जातियों में विद्या का न होना, गुण-कर्म विभाग से ईश्वर की देन है कि तुम्हारे स्वार्थमय विधान की देन है ?

मनुस्मृति चौथे अध्याय में मनुजी ने लिखा है कि—

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

न शूद्राय मतिं दद्यान्नोच्छिष्टं न हविष्कृतम् ।
न चास्योपदिशेद्धर्मं न चास्य व्रतमादिशेत् ॥८०॥

अर्थ—ब्राह्मण को उचित है कि वह शूद्र को किसी प्रकार की भी बुद्धि नहीं दे । उसे जूठा तथा देवयज्ञ का बचा अन्न (हवि) भी नहीं देवै । धर्म और उपवासादि व्रतों के करने का भी आदेश नहीं करे ।

योह्यस्य धर्ममाचष्टे यश्चैवादिशति व्रतम् ।
सोऽसंवृतंनाम तमः सहतेनैव मज्जति ॥८१॥

अर्थ—जो ब्राह्मण शूद्र को धर्म का उपदेश देता तथा उसे व्रत करने को कहता है, वह उस शूद्र के साथ ही अंधकारमय "असंवृत" नाम के नरक में जाकर दुःख भोगता है ।

अत्रिस्मृति में महर्षि अत्रिजी ने लिखा है कि—

वध्यो राज्ञा स वै शूद्रो जपहोमपरश्च यः ।
ततो राष्ट्रस्य हन्ताऽसौ यथावह्नेश्चवै जलम् ॥६॥

अर्थ—यदि शूद्र जप और होम आदि शुभ कर्म में तत्पर है, तो वह राजा से कठोर दण्ड पाने के योग्य है, क्योंकि वह जप होम में तत्पर होने के कारण राजा के देश का नाश करनेवाला है, जैसे जल अग्नि का नाशक है ।

अपने धर्मसूत्र १२-४ में महर्षि गौतमजी ने लिखा है कि—

अथ हास्य वेदमुपश्रृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रति-
पूरणमुदाहरणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीर भेदः ।

अर्थ—शूद्र यदि वेद सुन पावै तो उसके कानों में पिघला

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

हुआ सीसा और लाख भरवा देना चाहिए। यदि वेद का उच्चारण करे तो उसकी जीभ कटवा देनी चाहिए। यदि वेद का स्मरण करे तो उसको मरवा देना चाहिए।

इस संबंध में शूद्र तपस्वी शंबुक की कहानी प्रमाण है, जिसको श्री रामचन्द्रजी ने तप करने के कारण मारा था। श्री तुलसीदास कृत रामायण लवकुश काण्ड में इस प्रकार वर्णन है कि—

राजत राम सभा सब भ्राता, तहँ आयो एक द्विज बिलखाता।
कटुक कहत मुख करत पुकारा, हंस बंस बूड़ेउ संसारा।

अर्थ—श्री रामचन्द्रजी अपने सब भाइयों के सहित राजसभा में विराजमान हैं, तहाँ एक ब्राह्मण रोता हुआ आया। मुख से दुर्वचन कहता और पुकारता हुआ कहने लगा कि हंस के समान सूर्यवंश संसार में बूड़ गया।

रघुदिलीप शिवि सगरभुआरा, अमित प्रभाव को जाननहारा।
पितु जीवित सुत त्यागै प्राना, प्रभु अंतर्यामी सुन काना।

अर्थ—राजा रघु, दिलीप, शिवि और सगर बड़े प्रभावशाली थे और अपने प्रभावों को जाननेवाले थे। उनके राज्य में ऐसा नहीं होता था कि पिता के जीवित रहते हुए पुत्र मर जावै। ब्राह्मण की बात को अंतर्यामी श्री रामचन्द्रजी ने कान से सुना।

नर लीला करि राम कृपाला, लगे बिचार करन तेहि काला।
कारन कवन मृतकसुतभयऊ, द्विजकहँ दखिबिकलप्रभुभयऊ।

अर्थ—कृपालु श्री रामचन्द्रजी मनुष्य-लीला करके उस समय

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

विचार करने लगे कि क्या कारण है जो इसका पुत्र मर गया ? ब्राह्मण को देखकर श्री रामचन्द्रजी व्याकुल हुए।

प्रभुचित देखि गगन भई बानी, शूद्र तपहि सुनु सारंग पानी।
विन्ध्याचल गम्भीर बन मांहा, द्विजसुतहेतु मरन नरनाहा।

अर्थ—प्रभु के व्याकुल चित्त को देखकर आकाशवाणी हुई कि हे धनुष के धारण करनेवाले प्रभु ! आपके राज्य विन्ध्याचल के गम्भीर वन में शम्बुक नाम का शूद्र तपस्या कर रहा है, इस कारण से ही ब्राह्मण का पुत्र मर गया।

❀ छन्द ❀

यहि हेतु द्विज सुत मृतक सुनि, रथ साजि प्रभु आतुर चले।
दोउ परम शैल विलोकि पावन, मुदित होइ सन्मुख भले॥
शुचि रुचिर आश्रम बेदिका तहँ, देखि मुनि मन भावनी।
बहु बाग सुभग तड़ाग गुंजत, मंजु मधुकर सावनी॥

अर्थ—इस कारण ब्राह्मण का पुत्र मरा, यह सुनते ही श्री रामचन्द्रजी रथ पर चढ़ तुरत चले। वहाँ दो पवित्र पर्वत सामने देखकर मन में प्रसन्न हो गये। मुनियों के मन को मोहनेवाली वहाँ पवित्र सुन्दर वेदी और आश्रम को भी देखा, तहाँ बहुत-से सुन्दर बाग तथा सरोवर थे और वृक्षों पर सुन्दर भौंरे मधुर गुंजार कर रहे थे।

पिक मोर हंस चकोर किलकहिं, कीर शोभा पावहीं।
बन वृद्ध कोल किरात सादर, सर्वदा तहँ आवहीं॥
तकि क्रोध शक्ति विशिष छाड़ेउ, माथ लै सुरपुर गयो।
बर भक्तिआरत जानि तेहि तहँ, आपु तीरथ ब्रत कियो॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अथ—पपीहे, मोर, हंस और चकोर किलकारी मार रहे थे। तोते शोभा पा रहे थे। उस वन में वृद्ध कोल किरात आदर से सदा आते-जाते थे। यह देखकर तब श्री रामचन्द्रजी ने उसकी ओर देख क्रोध करके एक तीक्ष्ण बाण छोड़ा, जो उस शूद्र का माथा लेकर देवलोक को चला गया। उसकी श्रेष्ठ भक्ति ज्ञान और दुखी देखकर अपना लोक दिया। फिर आपने तहाँ तीर्थ व्रत किया।

दोहा—द्विज मृतक बालक तुरत, उठि बैठेउ हरषाय।
आये पुर रघुपति भगत, भय भंजन सुखदाय॥

अर्थ—उसी समय वह श्रेष्ठ ब्राह्मण का मरा हुआ बालक जीवित होकर प्रसन्न हो उठ बैठा और सुख के देनेवाले भक्तों का भय दूर करनेवाले श्री रामचन्द्रजी अपने नगर में आये।

देखा पण्डितजी! शूद्र-अतिशूद्रों को धर्म से हीन बनाने का विधान?

अब धन से हीन बनाने का विधान सुनिये। मनुस्मृति अध्याय १० श्लोक ९१ में लिखा है कि—

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभु कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥

अर्थ—शूद्रों के लिये तो केवल एक ही धर्म विधाता ने यह बनाया कि वे अपने से श्रेष्ठ तीनों वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य की सेवा सब प्रकार से निःकपट होकर करें।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

द्विजजाति की सेवा करने से शूद्रों को मज़दूरी मिलने का जो विधान है, उसे सुनिए।

मनुस्मृति अध्याय १० श्लोक १२५ में लिखा है कि—

उच्छिष्टमन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च।
पुलाकाश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदः॥

अर्थ—उस सेवक अर्थात् शूद्र को ब्राह्मण जूठा अन्न, पहिरने के लिए पुराना वस्त्र, निष्तत्व (सड़ा) धान्य (अन्न) और ओढ़ने-बिछाने के लिए पुराना वस्त्र देवे।

शूद्र उपर्युक्त विधान से अधिक धन इकट्ठा न करे, उसे सुनिए।

मनुस्मृति अध्याय १० श्लोक १२६ में लिखा है कि—

शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धन संचयः।
शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेवबाधते॥

अर्थ—शूद्र धन उत्पन्न करने में शक्तिवान् हो, तो भी धन इकट्ठा न करे, क्योंकि वह धनी होने पर ब्राह्मण-द्वेषी हो जाता है।

उपर्युक्त अध्याय श्लोक ९६ में लिखा है कि—

यो लोभादधमो जात्या जीवेदुत्कृष्टकर्मभिः।
तं राजा निर्धनं कृत्वा क्षिप्रमेव प्रवासयेत्॥

अर्थ—जो नीच जाति लोभ से श्रेष्ठ जाति की जीविका धारण करे, राजा उसका धन छीनकर उसे देश से निकाल दे।

पण्डितजी! अब आप ही बतलाइए, जब शूद्र-अतिशूद्रों को विद्या पढ़ने से रोका गया, तो उनमें विद्वान और बुद्धिमान कैसे हों? जब धर्म करने से रोका गया, तो फिर उनमें आचारी, विचारी, धर्मवान, योगी, आत्मज्ञानी और ब्रह्मज्ञानी कैसे हों?

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जब धन का अपहरण करके उन्हें निर्धन कंगाल बनाया गया, तो फिर उनमें धनवान, सेठ, साहूकार और बड़े बड़े व्यापारी कैसे हो सकते हैं ? यदि निर्धन होने के कारण वे मैले-कुचैले रहते हैं, तो क्या यह पूर्व-जन्म के गुण-कर्म के विभाग से ईश्वर की देन है या तुम्हारे पूर्वजों की देन है ?

यही दुष्ट भावना, दुष्ट विचार और स्वार्थ संसार की हवा हैं, जिनके लगने से तुम लोगों ने इन्हें शूद्र-अतिशूद्र समझकर, इनको बरबाद किया और उस पाप से तुम लोग भी "बारा-बाट" अर्थात् बरबाद हो गये। परिणाम यह हुआ कि ऋषि मुनि सन्तों की तपोभूमि अर्थात् देश भी "बाराबाट" हो गया।

पण्डितजी ! अभी तक तुमने जितनी बातें शूद्र-अतिशूद्रों के संबंध में कही हैं, सब तुम लोगों के स्वार्थ की हैं। स्वार्थ में पड़कर तुम लोगों ने शूद्र-अतिशूद्र कहलानेवालों के साथ, बहुत बड़ा अधर्म किया है। तुम लोगों के हृदय में जो शूद्र और द्विजजाति का भेद भरा हुआ है, यह बिल्कुल मिथ्या है। इसका कोई चिन्ह नहीं है कि यह द्विज है और यह शूद्र है। प्रत्येक मनुष्य समान हैं, सुनो।

❀ शब्दकड़ी ❀

एकै तुचा हाड़ मल मूत्रा, एक रुधिर एक गूदा।
एक बूँद सों सृष्टि कियो है, को ब्राह्मन को सूदा॥

अर्थ—चमड़ा, हाड़, मल, मूत्र, रक्त और मज्जा इत्यादि सबका एक-सा है और एक ही रज-वीर्य बूँद से कर्त्ता ने सबको बनाया है, इसलिए कौन ब्राह्मण है ? और कौन शूद्र है ?

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

रमैनी—गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा,
काको कहिये ब्राह्मन सुद्रा ॥

अर्थ—गुप्त (आत्मा) प्रगट (शरीर) मुद्रा (रूप) सबका एक है भावार्थ आत्म रूप और शरीर रूप से सब एक-सा हैं, फिर किसको ब्राह्मण और किसको शूद्र कहना चाहिए ?

सदगुरु कबीर साहिब की बात को सुनकर ब्राह्मण ने कहा—

ब्राह्मण—चिन्ह है क्यों नहीं ? द्विजजाति जनेऊ पहिरती है और शूद्रजाति जनेऊ नहीं पहिरती। यह शूद्रजाति और द्विज-जाति का चिन्ह है।

ब्राह्मण की बात को सुनकर सदगुरु कबीर साहिब ने कहा—

सदगुरु कबीर—पण्डितजी ! यह चिन्ह माननीय नहीं हो सकता, क्योंकि यह तुम लोगों का बनाया हुआ है, ईश्वर का नहीं । इतना चिन्ह बनाने पर भी तुम पूरे ब्राह्मण नहीं हुए, क्योंकि तुम तो जनेऊ पहिर कर ब्राह्मण हो गये, परन्तु अपनी अर्द्धांगिनी स्त्री को क्या पहिराया है ? वह तो जनेऊ-रहित जन्म से शूद्रिन ही बनी हुई है, जैसे—

❀ शब्दकड़ी ❀

घालि जनेऊ ब्राह्मन होना, मेहरी का पहिराया।
वै जन्म की सुद्रिन परसै, तुम पाँड़े क्यों खाया ॥

(सदगुरु कबीर साहिब ने अपने उपदेश को व्यापक बनाने के लिए, अपनी कविता में अधिकतर हिन्दी ग्रामीण भाषा का प्रयोग किया है, जैसे "वै" । इसको आज प्रदेश के जिला गोण्डा और

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जिला वस्ती में, वहाँ की ग्रामीण जनता "वह" (अन्य पुरुष एक वचन) और "वे" (अन्य पुरुष बहु वचन) के स्थान में बोलती है। इसी से सदगुरु कबीर साहिब ने भी, वैसा ही अन्य पुरुष एक वचन "वह" के स्थान में "वै" का प्रयोग किया है। बीजक इत्यादि ग्रन्थों में कहीं-कहीं पर "वै" का प्रयोग हुआ है)

और तुमने जो जनेऊ पहिरा है, वह न जन्म होने पर थी, न मरने पर रहेगी, केवल बीच में पहिरा है, इसलिए—

रमैनी—जन्मत सूद्र मुये पुनि सुद्रा,
क्रितिम जनेउ घालि जग दुन्द्रा।

अर्थ—जनेऊ से रहित उत्पन्न हुए तब भी शूद्र, फिर मरने पर भी जनेऊ न रहेगी तब भी शूद्र, केवल बीच में कृत्रिम (बनावटी) जनेऊ कन्धे में घालि (डाल) संसार में दुन्द्रा (दुन्द-झगड़ा) मचा रखा है।

पण्डित—हाँ यह बात सत्य है कि प्रत्येक मनुष्य का रूप एक है, इसलिए रूप से तो मनुष्य एक माने जा सकते हैं, किन्तु गुण-कर्म से नहीं, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के गुण-कर्म अलग-अलग होते हैं। इस गुण-कर्म से द्विजजाति और शूद्रजाति सिद्ध हो जाती हैं।

सदगुरु कबीर---गुण-कर्म से भी द्विजजाति और शूद्र जाति नहीं सिद्ध होतीं, क्योंकि द्विजजाति के कहलानेवाले सबके सब अच्छे गुण-कर्मवाले ही नहीं होते, नीच गुण-कर्मवाले भी होते हैं। इसी तरह शूद्रजाति में भी सबके सब नीच गुण-कर्म

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

वाले ही नहीं होते, अच्छे गुण-कर्म वाले भी होते हैं। सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि शूद्र कहलानेवाली जाति को, तुम लोगों ने अच्छे कर्म-धर्म करने से रोका है। इसके प्रमाण में ऊपर लिखा जा चुका है।

पण्डितजी! अन्त में तुम से फिर कहता हूँ कि न कोई द्विज है और न कोई शूद्र। तुम सब एक मनुष्यजाति हो, अत: आपस में प्रेम से रहो। इसी में तुम सबकी भलाई है। ईश्वर, वेद और धर्मशास्त्र की ओट में वाक्यजाल बनाना छोड़ दो।

❀ वेद मनुष्य मात्र के लिए हैं ❀

एक स्थान पर एक शूद्र और ब्राह्मण में वेद पढ़ने के अधिकार पर वाद-विवाद हो रहा था। ब्राह्मण का कहना था कि वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने केवल द्विजजाति को दिया है, शूद्र को नहीं। शूद्र खंडन करता था। वह वाद-विवाद इतना बढ़ गया था कि झगड़ा होने की दशा आ पहुँची थी। अकस्मात् वहाँ सदगुरु कबीर साहिब भी पहुँच गये। उन दोनो की बातों को सुन कर सदगुरु कबीर साहिब ने कहा कि यह बात बिल्कुल झूठ है कि वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने केवल द्विजजाति को दिया है। देखो, चौरासीलाख योनि के जीवों को जितना अधिकार दिया गया है, उन योनि के जीव अधिकार-सहित गर्भ से निकलते हैं, जिन्हें संसार देख रहा है। पशु, पक्षी और कीड़ा इत्यादि जीवों में थोड़ी बहुत बुद्धि सब में है, किन्तु मनुष्य में सबसे अधिक है। मनुष्य के हाथ भी अधिक हैं जो पशु, पक्षी, कीड़ा इत्यादि के

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जिला बस्ती में, वहाँ की ग्रामीण जनता "यह" (अन्य पुरुष एक वचन) और "वे" (अन्य पुरुष बहु वचन) के स्थान में बोलती है। इसी से सद्गुरु कबीर साहिब ने भी, वैसा ही अन्य पुरुष एक वचन "वह" के स्थान में "वै" का प्रयोग किया है। बीजक इत्यादि ग्रन्थों में कहीं-कहीं पर "वै" का प्रयोग हुआ है)

और तुमने जो जनेऊ पहिरा है, वह न जन्म होने पर थी, न मरने पर रहेगी, केवल बीच में पहिरा है, इसलिए—

रमैनी—जन्मत सूद्र मुये पुनि सुद्रा,
क्रितिम जनेउ घालि जग दुन्द्रा।

अर्थ—जनेऊ से रहित उत्पन्न हुए तब भी शूद्र, फिर मरने पर भी जनेऊ न रहेगी तब भी शूद्र, केवल बीच में कृत्रिम (बनावटी) जनेऊ कन्धे में घालि (डाल) संसार में दुन्द्रा (दुन्द-झगड़ा) मचा रखा है।

पण्डित—हाँ यह बात सत्य है कि प्रत्येक मनुष्य का रूप एक है, इसलिए रूप से तो मनुष्य एक माने जा सकते हैं, किन्तु गुण-कर्म से नहीं, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के गुण-कर्म अलग-अलग होते हैं। इस गुण-कर्म से द्विजजाति और शूद्रजाति सिद्ध हो जाती हैं।

सद्गुरु कबीर—गुण-कर्म से भी द्विजजाति और शूद्र जाति नहीं सिद्ध होतीं, क्योंकि द्विजजाति के कहलानेवाले सबके सब अच्छे गुण-कर्मवाले ही नहीं होते, नीच गुण-कर्मवाले भी होते हैं। इसी तरह शूद्रजाति में भी सबके सब नीच गुण-कर्म

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
वाले ही नहीं होते, अच्छे गुण-कर्म वाले भी होते हैं। सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि शूद्र कहलानेवाली जाति को, तुम लोगों ने अच्छे कर्म-धर्म करने से रोका है। इसके प्रमाण में ऊपर लिखा जा चुका है।

पण्डितजी! अन्त में तुम से फिर कहता हूँ कि न कोई द्विज है और न कोई शूद्र। तुम सब एक मनुष्यजाति हो, अतः आपस में प्रेम से रहो। इसी में तुम सबकी भलाई है। ईश्वर, वेद और धर्मशास्त्र की ओट में वाक्यजाल बनाना छोड़ दो।

❀ वेद मनुष्य मात्र के लिए हैं ❀

एक स्थान पर एक शूद्र और ब्राह्मण में वेद पढ़ने के अधिकार पर वाद-विवाद हो रहा था। ब्राह्मण का कहना था कि वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने केवल द्विजजाति को दिया है, शूद्र को नहीं। शूद्र खंडन करता था। वह वाद-विवाद इतना बढ़ गया था कि झगड़ा होने की दशा आ पहुँची थी। अकस्मात् वहाँ सद्गुरु कबीर साहिब भी पहुँच गये। उन दोनो की बातों को सुन कर सद्गुरु कबीर साहिब ने कहा कि यह बात बिल्कुल झूठ है कि वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने केवल द्विजजाति को दिया है। देखो, चौरासीलाख योनि के जीवों को जितना अधिकार दिया गया है, उन योनि के जीव अधिकार-सहित गर्भ से निकलते हैं, जिन्हें संसार देख रहा है। पशु, पत्ती और कीड़ा इत्यादि जीवों में थोड़ी बहुत बुद्धि सब में है, किन्तु मनुष्य में सबसे अधिक है। मनुष्य के हाथ भी अधिक हैं जो पशु, पत्ती, कीड़ा इत्यादि के

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

नहीं हैं। अधिक बुद्धि और हाथ का अधिकार मनुष्य को अधिक मिला है, जो गर्भ ही से लेकर निकलता है। पक्षी और कीड़ा इत्यादि से पशु में विशेष शक्तियुक्त पैर अधिक हैं, जो पक्षी और कीड़ा इत्यादि में नहीं हैं। यह विशेष शक्तियुक्त पैर का अधिकार पशु को अधिक मिला है, जो गर्भ से लेकर निकलता है। बहुत-से कीड़ों के पंख अथवा पखना नहीं होते और बहुत-से कीड़े और पक्षियों के पंख होते हैं। उन कीड़ों को जिनके पंख होते हैं और पक्षियों को पंख का अधिकार अधिक मिला है, जो गर्भ से लेकर निकलते हैं। बहुत-से कीड़ों के पैर होते हैं और बहुतों के पैर नहीं होते हैं। जिनके पैर होते हैं उन्हें पैर का अधिकार अधिक मिला है, जो गर्भ से लेकर निकलते हैं। जिन कीड़ों के पैर नहीं होते हैं, वे पैर से अधिकार-हीन हैं। इसी प्रकार समस्त योनि के जीवों का अधिकार समझ लीजिए।

ऐसा ही यदि द्विजजाति को ईश्वर की ओर से वेद पढ़ने का अधिकार मिला होता, तो ईश्वर पेट ही से द्विजजाति को वेद पढ़ा कर निकालता, तो संसार मान लेता कि वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने केवल द्विजजाति को दिया है, परन्तु उसने—

रमैनी—पेटै काहु न बेद पढ़ाया, सुनति कराय तुरुक नहिं आया।

इस कारण ब्राह्मणजी! ईश्वर की ओर से वेद पढ़ने का अधिकार केवल द्विजजाति ही को बतलाना मिथ्या है। प्रत्येक मनुष्य को वेद पढ़ने का अधिकार है, कोई भी पढ़ सकता है।

इस प्रकार सद्गुरु कबीर साहिब ने उपदेश करके दोनों को समझा दिया।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ छुआछूत पर विचार ❀

हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार हिन्दूजाति दो भागों में बटी है, एक द्विज और एक शूद्र। ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य द्विज कहलाते हैं। द्विज शब्द का अर्थ उत्तम और ऊँचजाति करते हैं।

शूद्र जाति भी दो भागों में बटी है, एक शूद्र और एक अतिशूद्र। अहीर, गड़रिया, तेली, तम्बोली, कुर्मी, काछी (कोइरी), कलवार, नाई, बारी, सोनार, लोहार, माझी, ठठेर, बढ़ई कहार और कुम्हार इत्यादि शूद्र कहलाते हैं। शूद्र शब्द का अर्थ अधम और नीचजाति करते हैं। कोरी, चमार, पासी, खटिक, कंजड़, नट, मुसहर, डोम, धोबी और धरिकार इत्यादि अतिशूद्र कहलाते हैं। अतिशूद्र शब्द का अर्थ अधिकशूद्र करते हैं।

हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार शूद्रजाति को कोई अधिकार नहीं है, केवल द्विजजाति की सेवा करे। अतिशूद्र बेचारों को तो सब अधिकारों से वञ्चित रख, बहिष्कृतकर, पशुओं से भी नीच समझा गया है। यहाँ तक कि छू जाने से जल छिड़कते और नहाते हैं, तब अपने को पवित्र समझते हैं। यह प्रथा भारतवर्ष में बहुतकाल से चली आ रही है। इस प्रकार ईश्वर-पुत्रों का अपमान देख सदगुरु कबीर साहिब को दुख हुआ। आज से पाँच सौ वर्ष पहिले उपर्युक्त छुआछूत के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। इस आन्दोलन के आदिप्रवर्त्तक आप थे, जो अनपढ़ ग्रामीण जनता से लेकर पढ़ेलिखे विद्वान, राजा-महाराजा और बादशाहों तक पहुँचाया था। प्रमाण में वह नीचे उद्धृत किया जाता है।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

एक अतिशूद्र से एक पण्डित छू गये। उस पर पण्डित क्रोधित हो कटुवचन इत्यादि कहते थे। वहाँ पर कुछ लोगों की भीड़ जमा हो गई। उसी समय वहाँ पर सदगुरु कबीर साहिब भी पहुँच गये। उस बात को सुनकर सदगुरु कबीर साहिब हँसे और कहने लगे कि—

❀ शब्द ❀

पण्डित ! देखहु मन में जानी।
कहुधौं छूति कहाँते उपजी, तबहिं छूति तुम मानी ॥टेक॥
नादे बिन्दे रुधिर के संगे, घट ही में घट सपचै।
अष्टकमल होय पुहमी आया, छूति कहाँ ते उपजै ॥१॥
लखचौरासी नाना बासन, सो सब सरि भौ माटी।
एकै पाट सकल बैठाये, छूति लेत धौं काकी ॥२॥
छूतिहि जेवन छूतिहि अँचवन, छूतहि जगत उपाया।
कहँहिं कबीर ते छूति बिवर्जित, जाके संग न माया ॥३॥

अर्थ—पण्डित ! अपने मन में विचार कर अथवा समझ कर देखो कि जिस छूति को तुम मानते हो, कहिये वह कहाँ से उत्पन्न हुई है ?

बिना गुण-कर्म शुद्ध-अशुद्ध का विचार किये, केवल अतिशूद्र जाति में जन्म लेने से उनकी देह से छूति मानते हो और द्विजजाति को पवित्र मानते हो, यह तुम्हारे अन्याय अविचार का प्रतीक है। क्या कभी तुमने देह उत्पत्ति के बारे में भी विचार किया है कि देह किससे उत्पन्न होता है ? नहीं किया है तो सुनो।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

स्त्री जब ३-४ दिन रजस्वला होने के पश्चात् स्नान कर शुद्ध होती है, तब स्त्री-पुरुष मैथुन करते हैं। मैथुन करने पर स्त्री-पुरुष स्नान कर शुद्ध होते हैं। पुरुष का बिन्दे (वीर्य्य) और स्त्री का रुधिर (रज) दोनों को नादे (पवन) संगे (संग में) मिला देता है। वे दोनों पदार्थ अष्टकमल (नाभिस्थान गर्भाशय) में स्थिर होते हैं और उनका पिण्ड बँधता है। वह पिण्ड गर्भाशय में धीरे-धीरे सपचै (बढ़ता) है और कुछ दिनों के उपरान्त मनुष्य के रूप में होता है। फिर नौ-दस महीने के पश्चात् मातृयोनि द्वारा पृथ्वी पर आता है। इस प्रकार रज-वीर्य से मनुष्य का शरीर उत्पन्न होता है। यदि वे रज और वीर्य मनुष्य के देह और कपड़े में लग जाते हैं, तो मनुष्य कपड़े धोकर स्नान करता है, तब अपने को पवित्र समझता है। इतना लोग रज और वीर्य को अपवित्र समझते हैं। उसी रज और वीर्य से तुम्हारा और उसका शरीर बना है, जिसमें मल और मूत्र भरे पड़े हैं। फिर तुम अपने को पवित्र और उसको अपवित्र कैसे मानते हो ? अब आप ही बतलाइये कि इससे बढ़कर और दूसरी छूति कहाँ से उत्पन्न होती है ? (१) इतनी छूति लादे रहने पर भी—

रमैनी—और के छुये लेत हौ सींचा,
तुमते कहहु कवन है नीचा।

यदि तुम दूसरों को न भी छुओ तब भी छू जाने से नहीं बचते हो, क्योंकि चौरासीलाख योनियों के नाना प्रकार के जीवों के शरीर, मिट्टी के बर्तन की तरह बन-बन के अनन्त काल से सब

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

पृथ्वी में सड़-सड़ के मिट्टी हो गये हैं और पानी में सड़-सड़ के मिल गये हैं। उसी मिट्टी पृथ्वी (पाट) पर जगतकर्त्ता ने उत्पन्न कर सबको बैठाया है, फिर भी न जाने तुम किसकी छूति मानते हो ? (२)

देखो, तुम जो भोजन करते हो वह भी छूति ही है और जो पानी पीते हो वह भी छूति ही है, क्योंकि चौरासीलाख योनि के जीवों के शरीर सड़-सड़के त्रसरेणु और अणु हो के पृथ्वी और पानी में मिले हुए हैं। उसी पृथ्वी और पानी से अन्न-फल उत्पन्न होते हैं, जिन्हें तुम भोजन करते हो और पानी पीते हो। सब छूति का मूल उपादान कारण माया है, अथवा माया ही छूति है, जिससे जगत उपाया अर्थात् उत्पन्न हुआ है। इसलिए छूति से कोई बचा नहीं है। सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि छूति से वही रहित है, जिसके संग माया नहीं है। (३)

इस प्रकार सदगुरु कबीर साहिब ने पण्डित को उपदेश देकर शान्त किया और सुननेवालों के ऊपर भी अच्छा प्रभाव पड़ा।

काशी में एक ब्राह्मण गंगास्नान और पूजापाठ करके निवृत्त हुए। पानी पीने के निमित्त कुछ मीठा और दूध लेकर, मन्दिर के बरामदा में एक चौतरा पर जा बैठे। पहिले मीठा खाकर गंगाजल पीने जा रहे थे कि इतने में किसी अतिशूद्र से चौतरा छू गया। वह इतने बिगड़े कि घाट पर कोलाहल मच गया और लोग इकट्ठा हो गये। वहाँ पर सदगुरु कबीर साहिब भी थे, सारी बातें सुनकर बोले कि—

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ शब्द ❀

पाँड़े ! बूझि पियहु तुम पानी।
जेहि मटिया के घर में बैठे, तामे सृष्टि समानी ।।टेक।।
छप्पन कोटि जादौ जहँ भींजे, मुनिजन सहस अठासी ।
पैग-पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भौ माटी ।।१।।
मच्छ कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पसु मानुष सब सरिया ।।२।।
हाड़ झरि झरि गूद गलि गलि, दूध कहाँ ते आया ।
सो लै पाँड़े जेवन बैठे, मटियहि छूति लगाया ।।३।।
बेद कितेब छाँड़ि देउ पाँड़े, ई सब मन के भरमा ।
कहँहिं कबीर सुनो हो पाँड़े, ई सब तुम्हरो करमा ।।४।।

अर्थ—पाँड़ेजी ! इस आदमी के चौतरा छू लेने से तुम्हारा पानी छू गया, जिससे इतना बिगड़ रहे हो । पहिले पानी को समझ लीजिए कि यह छू जाने से बचा है कि नहीं ? यह समझ लेने के पश्चात् तब पानी पीना । तुम यह भी समझो कि जिस मिट्टी के घर (बरामदा) में बैठे हुए हो, तिसमें सृष्टि समाई हुई है ।

छप्पन करोड़ यादव मरकर मिट्टी में सड़-सड़ के भींजे (समाये हुए) हैं । अट्ठासी हजार मुनि (मनन करनेवाले) लोग और पग-पग पर पैगम्बर लोग गाड़े हैं, जो सड़-सड़कर मिट्टी हो गये हैं । शूद्र-अतिशूद्रों की तो गिन्ती ही नहीं है । (१)

अब किञ्चित मात्र पानी की सुन लीजिए । पानी में मछली,

Channel eGangotri Urdu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

कछुआ और घरियार वियाते (बच्चे देते) हैं और मरकर सड़ते हैं, जिनका रक्त पानी में भरता है। नदियों के पानी में सब मनुष्यों के मैला मूत्र बहकर आते हैं। लोग मरे हुए पशु और मनुष्य नदियों में डाल देते हैं, जो सड़-सड़कर पानी में मिल जाते हैं। (२)

रमैनी—ढोर पतंग सरे घरियारा,
तेहि पानी सब करैं अचारा।

हाड़ (अस्थि) से झरि-झरि (स्पर्श करता हुआ) गूद (रसधातु) से गलि-गलि (बनकर) दूध कहाँ से आता है भावार्थ हड्डी को छूता हुआ रस धातु से बनकर दूध वहीं से आता है, जो मल-मूत्र से भरा दुर्गन्धि का भण्डार पशु शरीर है। वह दूध तो लेकर पाँड़े जी पीने बैठे हो, केवल मटियहि (चौतरा) के छू जाने से छूति लगाते हो। (३)

(आयुर्वेद की पुस्तकों में लिखा है कि पशु मनुष्य के शरीर में रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सातधातु होते हैं। दूध, रज (मासिक खून) वसा, पसीना, दाँत, बाल और ओज ये सात उपधातु होते हैं। रसधातु का उपधातु दूध है, जो रस से बनता है। रक्तधातु का उपधातु रज (स्त्री शरीर में मासिक खून) है, जो रक्त से बनता है। मांसधातु का उपधातु वसा है, जो मांस से बनता है। मेदधातु का उपधातु पसीना है, जो मेद से बनता है। अस्थिधातु के उपधातु दाँत हैं, जो अस्थि से बनते हैं। मज्जाधातु के उपधातु बाल हैं, जो मज्जा से बनते हैं। शुक्र-धातु का उपधातु ओज है, जो शुक्र से बनता है। इसी से तीसरी

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
शब्द कहीं में शूद्र का अर्थ रसधातु किया है और उससे दूध बनना बतलाया है)

सद्गुरु कबीर साहिब की बात सुनकर ब्राह्मण ने वेद, स्मृति और अन्य पुस्तकों के प्रमाण देकर प्रमाणित किया कि शूद्र ईश्वर के अन्तिम अंग पैर से उत्पन्न होने के कारण अन्त्यज कहलाता है। धर्मशास्त्र प्रमाण से अन्त्यज ही अधम नीच है। शूद्र में अतिशूद्र तो सब प्रकार से अस्पृश्य अर्थात् छूने योग्य नहीं है।

इस प्रकार ब्राह्मण की बात सुनकर सद्गुरु कबीर साहिब ने कहा कि पाँड़ेजी! तुमने जो वेद, स्मृति और अन्य पुस्तकों का प्रमाण दिया है, उन पुस्तकों को छोड़ो, ये सब मन के भ्रम हैं। इस प्रकार आँखें मूँदकर एकांगी (केवल द्विजजाति के पक्ष की) बातें करना तुम्हारा कर्म (काम, पेशा) है। (४)

पण्डितजी! कोई मनुष्य किसी जाति विशेष में जन्म लेने से शुद्धाशुद्ध ऊँच-नीच नहीं होता है, किन्तु गुण-कर्म-स्वभाव से शुद्धाशुद्ध ऊँच-नीच होता है। न कोई जाति विशेष सबकी सब गुण-कर्म-स्वभाव में शुद्ध ऊँची होती है और न कोई जाति सब की सब गुण-कर्म-स्वभाव में अशुद्ध नीच ही। सब जाति में गुण-कर्म स्वभाव से शुद्धाशुद्ध ऊँच-नीच होते हैं। इसलिये शूद्र और द्विज संकुचित विचार का पक्ष छोड़कर, उदार भाव धारण कर विश्व के मनुष्यमात्र को अपना बन्धु समझो। इस बात पर सदैव ध्यान रखना कि उत्तम मनुष्य वह है, जो मांस और मद (शराब, गाँजा, चरस, भाँग, अफीम, मदक और तम्बाकू इत्यादि) को छोड़कर उत्तम गुण को ग्रहण करता है और उत्तम कर्म को करता

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

है। इस प्रकार जिस मनुष्य में उत्तम गुण-कर्म हों, उस मनुष्य को उत्तम जानना, चाहे कोई हो, यथा—

साखी—माँस और मद को तजै, उत्तिम गुन-कर्म होय।
मानुष उत्तिम जानिये, चाहै होवै कोय॥

इस प्रकार ब्राह्मण को उपदेश देने के पश्चात् सद्गुरु कबीर साहिब ने, अतिशूद्र के कहलानेवाले से कहा कि भाई! अब मुझे तुमसे भी कुछ कहना है। तुम लोगों में भी त्रुटि है, जो वंचकों के बहकाने से मान बैठे हो कि भगवान ने हमको नीच बनाया है। हमको पैर से उत्पन्न किया है। हम नीच जाति के हैं। यही तुम्हारी भावना तुमको गड्ढे में गिराती है। तुम लोगों को भगवान ने नीच नहीं बनाया है। न तुम लोगों को पैर से उत्पन्न किया है। न तुम लोग नीच जाति हो। तुम लोग अपनी आत्मा को इतना गिरा, क्यों अपमान कराते हो? देखो, कोई मनुष्य नीच नहीं होता, कर्म नीच होता है। नीच कर्म को त्यागकर अच्छे बनो। साफ़ सुथरे रहो। माँस मद (नशा) से दूर रहो। बुद्धिमान बनने के लिए सतसंगति करो और विद्या पढ़ो, नहीं तो नष्ट हो जाओगे, जैसे—

रमैनी—पढ़ना पढ़हु धरहु जनि गोई,
नहिं तो निश्चय जाहु बिगोई।

अर्थ—"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।" के अनुसार जो समय बीत गया उसे तो जाने दो, चिन्ता करना व्यर्थ है। शेष वर्तमान और भविष्य दो समय हैं। अब वर्तमान

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
समय में लिपि विद्या, अपरा विद्या और मेरी परा विद्या "पढ़हु" और भविष्य में फिर "पढ़ना"। इन्हें छिपाकर न रखो, नहीं तो निश्चय से जाहु बिगोई अर्थात् नष्ट हो जाओगे।

इस प्रकार सद्गुरु कबीर साहिब ने उपदेश देकर समता का भाव उत्पन्न किया। लोग प्रसन्न चित्त होकर चले गये।

❀ भजन ❀

देखो ! चतुरों की चतुराई।
चारवरण को आप बनावैं, ईश्वर को बतलाई ॥ टेक ॥
एक चतुर ने यजुर्वेद में, गढ़ि के ऋचा मिलाई।
कहै कि चार अंग से ईश्वर, चारो वरण बनाई ॥
मनुस्मृति में मनू ने, यही बात दोहराई।
चार वरण के अधिकारों को, विधी पूरवक गाई ॥
अर्जुन कृष्ण संवाद व्यास ने, गीता को निर्माई।
गुण कर्म भाग कृष्ण के द्वारा, उतपति वरण दिखाई ॥
इसी चतुराई में पड़ करके, भारत गया नशाई।
अबहूँ न बुद्धि ठिकाने इसकी, 'चंसू' साफ बताई ॥

❀ हिन्दू-मुस्लिम एकता ❀

सद्गुरु कबीर साहिब मानिकपुर में प्रचार करने के पश्चात्, सन्त मंडली सहित प्रयागराज (वर्तमान इलाहाबाद) में आये। उस समय प्रयागराज में जातीय पक्ष लेकर, हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा हुआ था। नगर में अशान्ति फैली हुई थी। लोग भय के मारे घर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

से बाहर नहीं निकलते थे। एक दूसरे के पास जाने से भयभीत होते थे। उस दृश्य को देखकर सद्गुरु कबीर साहिब बहुत दुखी हुए। आपने प्रयागराज की चौक में खड़े होकर, उपदेश देना आरंभ किया।

ऐ हिन्दू-मुसलमान कहलानेवालो!

रमैनी—झूठ गरब भूलो मत कोई, हिंदूतुरुक झूठ कुल दोई

अर्थ— तुम लोगों में जो जातीय घमंड है कि मैं हिन्दू हूँ, मैं मुसलमान हूँ, यह घमंड बिल्कुल झूठा है। ये हिन्दू-मुसलमान दोनों कुल या जातियाँ झूठी हैं। तुम सब एक सच्ची जाति इन्सान अथवा मनुष्य हो, हिन्दू-मुसलमान नहीं, यथा—

साखी—ना हिन्दू ना तुरुक तुम, सबहीं मानुष एक।
आपुस में झगड़ा करत, धर-धर अपनी टेक॥

शब्दकड़ी—कहँहि कबीर राम रमि रहिये,
हिन्दू - तुरुक न कोई।

इसलिए मैं दोनों को समझाता हूँ कि झूठा जातीय घमंड अच्छा नहीं। तुम्हारे इस जातीय घमंड ने प्रेम के स्थान में बैर, शान्ति के स्थान में अशान्ति उत्पन्न कर रखा है, जिससे एक दूसरे के वैरी बन स्वयं नष्ट हो रहे हो और दूसरों को नष्ट कर रहे हो। हिन्दू-मुसलमान झूठी काल्पनिक जाति की टेक पकड़कर ये हत्यायें, ये पाप, शोक! शोक! शोक! ऐ गुमराह लोगों! न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान और न कोई पहिचान ही है कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इस प्रकार सदगुरु कवीर साहिव की तक़रीर (भाषण) सुनकर एक काजी साहब आये। वह 'खोजा जाति' के थे और उनका नाम भी 'खोजादे' था। पहिले तो उन्होंने क़ुरान को खुदा का कलाम बताकर, क़ुरान की वहुत बड़ाई की और कहा कि हमारे खुदा का कलाम समय-समय पर पैग़म्बरों पर नाज़िल (उतरा) हुआ है। इंजील में लिखा हुआ है कि ख़ुदा ने कहा है कि "सुन्नत करो"। ख़ुदा का हुक्म मानकर सबसे पहिले हमारे पैग़म्बर इब्राहीम साहब ने सुन्नत करना चलाया है। हम लोग ख़ुदा का हुक्म मानकर सुन्नत करते हैं, किन्तु यह सुन्नत ख़ुदा का किया हुआ माना जाता है, जैसे हमारे पैग़म्बर (ईश्वर-दूत) मुहम्मद साहब की ज़बान से क़ुरान का बयान हुआ है, मगर वह बयान ख़ुदा का बयान है, मुहम्मद साहब का नहीं। इसी तरह हम लोग ख़ुदा का हुक्म मानकर सुन्नत करते हैं, लेकिन सुन्नत ख़ुदा ही करता है, ऐसा हम लोगों का अक़ीदा (विश्वास) है, क्योंकि ख़ुदा ज़र्रा-ज़र्रा (कण-कण) में है। यह सुन्नत ही हिन्दू-मुसलमान जाति की पहिचान है और आप कहते हैं कि कोई पहिचान नहीं है।

काजी साहब की बातों को सुनकर सदगुरु कबीर साहिब ने कहा कि—

❀ शब्द ❀

काजी ! तुम कवन कितेब बखानी।
झंखत बकत रहहु निशु बासर, मति एकौ नहिं जानी ॥टेक॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सकति अनुमान सुनति करत हो, मैं न बदौंगा भाई ।
जो खुदाय तोर सुनतिकरत है, आपुहि कटि क्यों न आई ॥१॥
सुनति कराय तुरुक जो होना, औरत को का कहिये ।
अरध सरीर नारि बखानी, ताते हिन्दुइन रहिये ॥२॥
घालि जनेऊ ब्राह्मन होना, मेहरी का पहिराया ।
वै जनम की सुद्रिन परसै, तुम पाँड़े क्यों खाया ॥३॥
हिन्दू-तुरुक कहाँ ते आया, किन यह राह चलाई ।
दिल मँह खोजि देखु खोजादे, भिस्त कहाँ किन पाई ॥४॥
कहँहिं कबीर सुनहु हो सन्तों, जोर करत हैं भाई ।
कबिरन ओट राम की पकरी, अन्त चले पछिताई ॥५॥

अर्थ—काजी साहब ! तुम कौन किताब क़ुरान का बखान करते हो ? क़ुरान पढ़कर रात-दिन बकते-झकते रहते हो, मगर अपनी बुद्धि से एक बात भी न जान सके कि सुन्नत करने के लिए खुदा ने हुक्म दिया है या स्वयं सुन्नत करता है अथवा सुन्नत करना मनुष्य ने बनाया है।

(सदगुरु कबीर साहिब की ग्रामीण भाषा सुनकर बहुत-से लोग उनके सामने अपने को पढ़ा-लिखा विद्वान होने का अहंकार करके आते थे। सदगुरु कबीर साहिब उनकी चुटकी भी अच्छी लेते थे, जैसे किताब न कहकर "कितेब" कहना, यह व्यंग्यात्मक चुटकी है। "बेद कितेब छाड़ि देउ पाँड़े, ई सब मन के भरमा।" इसमें भी "कितेब" व्यंग्य है)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सुन्नत तुम सब अपनी सकति (शक्ति, बल) से करते हो, न खुदा ने सुन्नत करने के लिए हुक्म दिया है, न स्वयं सुन्नत करता है। लोगों की बनाई हुई किताबें पढ़कर केवल अनुमाने (अनुमान, अन्दाज) करते हो कि खुदा ने सुन्नत करने के लिए हुक्म दिया होगा। मगर भाई काजी साहब ! मैं नहीं बदौंगा (कहूँगा) कि सुन्नत करने के लिए खुदा ने हुक्म दिया है, क्योंकि अगर खुदा की इच्छा सुन्नत करने की होती, तो वह तुम लोगों को क्यों हुक्म देता कि "सुन्नत करो" ? वह स्वयं शरीर बनाते समय सुन्नत कर देता। देखो, मनुष्य, पशु, पक्षी और कीड़ों की ओर। वह जिसको जैसा बनाना चाहता है, उसको पेट ही में वैसा बना देता है। और जो दूसरी बात कहते हो कि सुन्नत खुदा करता है, बिल्कुल गलत, क्योंकि अगर तुम लोगों की सुन्नत तोर (तुम्हारा) खुदा करता है, तो आप ही पेट से कटकर क्यों नहीं आ जाती ? (१)

सब से हँसी की बात तो यह है कि तुम लोग सुन्नत करा के मुसलमान हो गये, मगर फिर भी पूरे मुसलमान न हो सके, क्योंकि स्त्री पुरुष का आधा अङ्ग कहलाती है, उसकी सुन्नत तो हुई ही नहीं। कहिये काजी साहब ! औरत को क्या कहोगे ? वह बेचारी तो हिन्दुइन ही रही। (२)

काजी साहब की बात का समर्थन करने के लिए एक ब्राह्मण आये और बोले कि काजी साहब ! आप ठीक कहते हो, जाति की पहिचान है क्यों नहीं ?

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सद्गुरु कबीर साहिब ने कहा कि ब्राह्मण जी ! तुम भी तो वैसा ही हो। कन्धे में जनेऊ डालकर तुम तो ब्राह्मण बने हो, परन्तु अपनी मेहरी (स्त्री) को क्या पहिराया है ? वह तो जन्म से शूद्रिन ही बनी हुई है। शूद्र के हाथ का भोजन अपवित्र बतलाते हो और वह तुम्हारी स्त्री शूद्रिन परस के देती है, तुम पाँड़े जी ! क्यों खाते हो ? (३)

हिन्दू-मुसलमान ये दोनों जातियाँ कहाँ से आई हैं ? और किसने इस जातीय मार्ग को चलाया है ? भावार्थ हिन्दू-मुसलमान जातियाँ ईश्वर या खुदा के यहाँ से बनकर नहीं आई हैं और न ईश्वर या खुदा ने जातीय मार्ग चलाया है। ये सब ईश्वर या खुदा का नाम लेकर मनुष्यों ने बनाया है।

इस जाति के नाम और पक्ष पर तुम लोग और भी बड़े-बड़े पाप करते हो, जैसे—

रमैनी—काजी काज करहु तुम कैसा,
घर-घर जबह करावहु भैंसा।
बकरी मुरगी किन फरमाया,
किसके हुकुम तुम छुरी चलाया।

साखी—दिन भर रोजा रहत हौ, रात हनत हो गाय
यहै खून वह बन्दगी, क्यों कर खुसी खुदाय ॥
गला काटि बिसमिल करैं, ते काफिर बेबूझ।
औरन को काफिर कहैं, अपना कुफर न सूझ ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

शब्दकड़ी—तुरुक रोजा निमाज गुजारैं,
बिसमिल बाँग पुकारैं।
इनकी भिस्त कहाँ ते होइहै,
साँझै मुरगी मारैं ॥

ऐ खोजादे साहब ! जुल्म अत्याचार करने से, पशु-पक्षियों की हत्या करने से और मनुष्यों के मारने से किसने कहाँ बहिश्त पाई है ? (४)

सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि हे भाई सन्तो ! सुनो, जिस तरह जाति के नाम पर मुसलमान अपने ज़ोर (बल) से गरीब गाय, बकरी, भैंस, मुरगी और भेड़ इत्यादि पर जुल्म करते हैं अर्थात् मार के खाते हैं, उसी तरह कबिरन (अज्ञानी हिन्दू लोग) भी राम की ओट तो पकड़ते हैं, उसे ईश्वर मानकर सुमिरन-भजन करते हैं, घट-घट का निवासी और जीव को उसकी संतान बतलाते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें मार के खाते हैं, जैसे—

शब्दकड़ी—माटी के करि देवी देवा,
काटि-काटि जिव देइया जी।
जो तुहरा है साचा देवा,
खेत चरत क्यों न लेइया जी ॥
माँस मछरिया तैं पै खइया,
ज्यों खेतन में बोइया जी।

साखी—तिल भर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान।
कासी करवट ले मरै, तौ भी नरक निदान ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सद्‌गुरु कबीर साहिब ने कहा कि ब्राह्मण जी ! तुम भी तो वैसा ही हो। कन्धे में जनेऊ डालकर तुम तो ब्राह्मण बने हो, परन्तु अपनी मेहरी (स्त्री) को क्या पहिराया है ? वह तो जन्म से शूद्रिन ही बनी हुई है। शूद्र के हाथ का भोजन अपवित्र बतलाते हो और वह तुम्हारी स्त्री शूद्रिन परस के देती है, तुम पाँड़े जी ! क्यों खाते हो ? (३)

हिन्दू-मुसलमान ये दोनों जातियाँ कहाँ से आई हैं ? और किसने इस जातीय मार्ग को चलाया है ? भावार्थ हिन्दू-मुसलमान जातियाँ ईश्वर या खुदा के यहाँ से बनकर नहीं आई हैं और न ईश्वर या खुदा ने जातीय मार्ग चलाया है। ये सब ईश्वर या खुदा का नाम लेकर मनुष्यों ने बनाया है।

इस जाति के नाम और पक्ष पर तुम लोग और भी बड़े-बड़े पाप करते हो, जैसे—

रमैनी—काजी काज करहु तुम कैसा,
घर-घर जबह करावहु भैंसा।
बकरी मुरगी किन फरमाया,
किसके हुकुम तुम छुरी चलाया।

साखी—दिन भर रोजा रहत हौ, रात हनत हो गाय
यहै खून वह बन्दगी, क्यों कर खुसी खुदाय ॥
गला काटि बिसमिल करैं, ते काफिर बेबूझ।
औरन को काफिर कहैं, अपना कुफर न सूझ ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

शब्दकड़ी—तुरुक रोजा निमाज गुजारैं,
बिसमिल बाँग पुकारैं।
इनकी भिस्त कहाँ ते होइहै,
साँझै मुरगी मारैं॥

ऐ खोजादे साहब ! जुल्म अत्याचार करने से, पशु-पक्षियों की हत्या करने से और मनुष्यों के मारने से किसने कहाँ बहिश्त पाई है ? (४)

सद्गुरु कबीर साहिब कहते हैं कि हे भाई सन्तो ! सुनो, जिस तरह जाति के नाम पर मुसलमान अपने जोर (बल) से गरीब गाय, बकरी, भैंस, मुरगी और भेड़ इत्यादि पर जुल्म करते हैं अर्थात् मार के खाते हैं, उसी तरह कबिरन (अज्ञानी हिन्दू लोग) भी राम की ओट तो पकड़ते हैं, उसे ईश्वर मानकर सुमिरन-भजन करते हैं, घट-घट का निवासी और जीव को उसकी संतान बतलाते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें मार के खाते हैं, जैसे—

शब्दकड़ी—माटी के करि देवी देवा,
काटि-काटि जिव देइया जी।
जो तुहरा है साचा देवा,
खेत चरत क्यों न लेइया जी॥
माँस मछरिया तैं पै खइया,
ज्यों खेतन में बोइया जी।

साखी—तिल भर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान।
कासी करवट ले मरै, तौ भी नरक निदान॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जिव जानि मारहु बापुरा, सबका एकै प्रान।
हत्या कबहूँ न छूटिहै, कोटिन सुनहु पुरान ॥
अंकुरज भखै सो मानव, माँस भखै सो स्वान।
जीव वधै सो काल है, सदा नरक परमान ॥
अजामेध गोमेध जग, अस्वमेध नरमेध।
कहैं कबीर अधरम को, धरम बतावैं बेद ॥

जो ब्राह्मण "वेदविधि हिंसा हिंसा न भवति" कहकर पशु बलिदान करवाते हैं, वे लोग—

❁ शब्द ❁

सन्तो ! पाँड़े निपुन कसाई।
बकरा मारि भैंसा पर धावैं, दिल मँह दरद न आई ॥टेक॥
करि असनान तिलक दै बैठे, बिधि ते देवि पुजाई।
आतमराम पलक मो बिनसै, रुधिर की नदी बहाई ॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माँहिं अधिकाई।
इनते दीच्छा सब कोई माँगै, हँसि आवत मोहि भाई ॥
पाप कटन को कथा सुनावहिं, करम करावहिं नीचा।
दोऊन कहँ नरक लै जइहैं, गहे हाथ जम घींचा * ॥
गाय वधै तेहि तूरुक कहिये, उनते का ये छोटे।
कहँहिं कबीर सुनहु हो सन्तो, कलि मँह ब्राह्मन खोटे ॥

उपर्युक्त पाप से माँसाहारी हिंसक हिन्दू लोग अन्त समय मृत्यु आने पर, पश्चात्ताप करते हुए नरक में चले जाते हैं। (५)

* गर्दन

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इस तरह—हिन्दू कि दया मेहर तुरुकन की,
दोनौं घट सों त्यागी।
वै हलाल वै झटका मारैं,
आगि दुनौं घर लागी॥

काजी साहब ! आपने मुसलमान जाति की पहिचान में जो सुन्नत का सबूत दिया है, यह कोई पहिचान नहीं है। यह सब मनुष्य का बनाया हुआ है, खुदा का नहीं। मेरे सामने खुदा का बनाया हुआ सबूत (प्रमाण) दो। झूठी बातों की बकवाद से कोई फ़ायदा नहीं। मैं हिन्दू-मुसलमान दोनों के सामने सत्य बतला रहा हूँ कि—

साखी—एक रूप हिन्दू तुरुक, नहिं कोई पहिचान।
कबीर दोउ अज्ञान बस, झूठा झगड़ा ठान॥

चौपाई—जाति पाँति होके नहिं आये,
यह जग में झगड़ा फैलाये।
जाति बरन सब एकहि होई,
दूसर जाति नहीं है कोई।

❀ आत्म रूप से भी तुम सब एक हो ❀

जिस तरह से तुम लोगों के देह का रूप एक है, ऐसा ही तुम लोगों की आत्मा (रूह) का रूप भी एक ही है। उसकी भी हिन्दू-मुसलमान कोई जाति नहीं है, जैसे—

रमैनी--ब्यापक एक सकल की जोती, नाम धरे काकहिये भौती।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अर्थ—सब को प्रकाशमय शरीर में व्यापक है और वह एक है अर्थात् उसकी हिन्दू मुसलमान कोई दूसरी जाति नहीं है। इसी तरह भौती अर्थात् पाँच भूतों से बना हुआ भौतिक शरीर का हिन्दू-मुसलमान नाम धरने से क्या उसकी कोई दूसरी जाति कहना चाहिए ? कदापि नहीं।

रमैनी—हंस देह तजि न्यारा होई,
ताकर जाति कहै धौं कोई।

अर्थ—जीव जब शरीर छोड़ के न्यारा होता है, भला तिसकी जाति कोई कह सकता है कि—

रमैनी—स्याह सपेद कि राता पियरा,
अबरन बरन कि ताता सियरा।

अर्थ—काला है कि सफेद है। राता (लाल) है कि पीला है। रूपरहित है कि रूपवाला है। गरम है कि सियरा (शीतल) है ?

रमैनी—हिन्दू तुरुक कि बूढ़ो बारा,
नारि पुरुष का करहु विचारा।

अर्थ—हिन्दू है कि मुसलमान है। बुड्डा है कि बच्चा है। स्त्री है कि पुरुष है। इन सब बातों का विचार करो।

❀ तुम सब का ईश्वर भी एक ही है ❀

रमैनी—एकै मटिया एक कुम्हारा,
एक सबन का सिरजन हारा।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

एक चाक सब चित्र बन या,
नाद बिन्द के मध्य समाया।

❀ तुम सबकी माता (माया) भी एक ही है ❀

रमैनी—एकै जनी जना संसारा,
कवन ज्ञान ते भयउ निनारा।

काजी—क्यों कबीर साहब! आप तो कहते हैं कि खुदा ने आदमी की कोई दूसरी जाति नहीं बनाई है और न उसकी कोई पहिचान है, मगर मैं देखता हूँ कि खुदा ने इन्सान को काला, लाल, पीला और सफेद चार हिस्सों में बाँट दिया है। किसी देश के आदमी पीले देखे जाते हैं, किसी देश के आदमी काले देखे जाते हैं, किसी देश के आदमी लाल देखे जाते हैं और किसी देश के आदमी सफेद देखे जाते हैं। अगर खुदा ने आदमी की जाति न बनाई होती, तो चार रंग के आदमी क्यों बनाता? क्या यह जाति की पहिचान नहीं है?

सद्गुरु कबीर—सुनिए काजी साहब! काली, लाल और सफेद रंग की गायें अवश्य होती हैं, परन्तु वे सब की सब गाय कहलाती हैं। इसी तरह मनुष्य को भी समझ लीजिए, अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, यथा—

साखी—कपिल सेत कारी बरन, सभै कहावत गाय।
तैसहि मानुष जानिये, कहैं कबिर समुझाय॥

अन्त में हिन्दू-मुसलमान दोनों से फिर कहता हूँ कि तुम सब

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
एक ईश्वर अथवा खुदा की सन्तान हो। एक दूसरे को अपना भाई समझकर आपस में प्रेम करो, प्रेम से रहो और संसार के मनुष्य मात्र को अपना बन्धु समझो।

जिस मनुष्य में, मनुष्य-प्रेम प्रवेश नहीं होता, उस मनुष्य का शरीर श्मशान (मरघट) के समान है और उसका जीवन लोहार की धौंकनी के समान मुर्दा है, जैसे—

साखी—जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जानु मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान॥

इस प्रकार सद्गुरु कबीर साहिब ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को समझा-बुझाकर शान्ति स्थापित (कायम) की।

काजी ने सद्गुरु कबीर साहिब से पूछा कि क्यों कबीर साहब! आप हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियों को झूठी मनुष्यकृत बतलाते हो, आखिरकार आपकी क्या जाति है?

सद्गुरु कबीर साहिब ने उत्तर दिया कि—

साखी—हिन्दू कहो तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिं।
पाँच तत्त का पूतला, गैबी खेले माहिं॥

उसके उपरान्त सन्तमण्डली सहित झूसी में जाकर शेखअकरदी, शेख सकरदी और मियाँ शेख तकी को उपदेश देकर जौनपुर गये।

वहाँ पर एक मुसलमान ने जबरदस्ती एक गाय की कुर्बानी कर डाली, जिस पर हिन्दू-मुसलमानों में बड़ी अशान्ति फैल गई। उस बात को सुनकर सद्गुरु कबीर साहिब वहाँ गये और उस मुसलमान को बहुत फटकारा, जैसे—

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ शब्द ❀

भूला वे अहमक नादाना, तू हरदम रामहिं ना जाना ॥टेक
बरवस आनि के गाय पछारा, गला काटि जिव आपु लिया ।
जीयत जिव मुरदा करि डारा, तिसको कहत हलाल हुआ ॥१॥
जाहि माँसु को पाक कहत हो, ताकी उतपति सुनु भाई ।
रज बीरज सों माँसु उपानी, माँसु नपाकी तुम खाई ॥२॥
अपनी देखि कहत नहिं अहमक, कहत हमारे बड़न किया
इनका खून तुम्हारी गरदन, जिन तुमको उपदेश दिया ॥३॥
स्याही गई सफेदी आई, दिल सफेद अजहूँ न हुआ ।
रोजा बंग निमाज का कीजै, हुजरे भीतर पैठि मुआ ॥४॥
पंडित बेद पुरान पढ़त हैं, मूलना पढ़हीं कुराना ।
कहँहि कबिर दोउ गये नरक में, हरदम रामहिं ना जाना ॥५॥

अर्थ—ऐ मूर्ख नादान ! तू राम को भूला हुआ है । प्राणी मात्र के प्रत्येक श्वास में रहनेवाले राम को तूने नहीं जाना ।

(सदगुरु कबीर साहिब का राम सर्वत्र रहनेवाला, निरुपाधिक, निर्विशेष, सगुण-निर्गुण के परे और शुद्ध चैतन्य है । राजा दसरथ के पुत्र विशेष लोक निवासी अवतारी राम नहीं, यथा—

रमैनी---दसरथ सुत तिहु लोकहिं जाना,
राम नाम का मरम है आना ।

वह एकदेशी सातवें आसमान का रहनेवाला खुदा भी नहीं है)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ज़बरदस्ती गाय लाके गिरा दिया और उसका गला काट के मार डाला। जीवित जीव को मुर्दा कर डाला और तिसको कहता है कि हलाल (शुद्ध) हुआ। (१)

भाई ! जिस माँस को तू पाक (शुद्ध) कहता है, तिसकी उत्पत्ति तो ज़रा सुन। मादा के रज और नर के वीर्य से माँस उत्पन्न होता है। उस रज-वीर्य से बने हुए नापाक माँस को तू खाता है और फिर भी पवित्र बतलाता है। (२)

ऐ अहमक ! तू अपनी देखी तो कहता नहीं कि मैंने कुर्बानी करके गुनाह (पाप) किया है ! अब अनजान बनकर कहता है कि हमारे बुजुर्ग करते आये हैं। जिसने तुमको कुर्बानी करने का उपदेश दिया है, उसने इन गाय भेड़ बकरी पशुओं का तो खून करवाया और तुम्हारी गर्दन को पाप में फँसा दिया, क्योंकि इसका बदला तुमको देना होगा। (३)

तुम्हारी जवानी चली गई, बुढ़ापा आ गया और बाल तुम्हारे सफ़ेद हो गये, मगर दिल (मन) तुम्हारा आज भी सफ़ेद (साफ़) न हुआ। अगर मन साफ़ न हुआ तो रोज़ा रखना, बाँग देना, नमाज़ पढ़ना और हुजरे (एकान्तवास) के भीतर बैठ के व्यर्थ मरना है। इनके करने से क्या होता है ? भावार्थ कुछ नहीं। (४)

सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि पण्डित वेद-पुराण पढ़ते हैं और पशु बलिदान करवाते हैं तथा मौलवी कुरान पढ़ते हैं और जानवरों की कुर्बानी करवाते हैं, इन पापों से वे दोनों नरक में गये,

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
क्योंकि उन लोगों ने प्रत्येक श्वास में रहनेवाले राम को नहीं जाना। (५) ❀

इस प्रकार प्रत्येक श्वास में रहनेवाले राम को समझाकर, हिन्दू-मुसलमान दोनों को शान्त किया।

❀ इस प्रकार सद्गुरु कबीर साहिब के उपदेश को सुनकर बहुतेरे मुसलमान अण्डा, मुर्गी, मांस का खाना और गाय इत्यादि पशुओं की कुर्बानी करना छोड़कर, शिष्य हो, सत्य धर्म पर चलने लगे। कई तो अच्छे सन्त हो गये हैं। प्रसंग वश कुछ नाम गिनाये देता हूँ। एक "खालिक" नाम के सन्त हो गये हैं। उनकी वाणी इस प्रकार है—

❀ कव्वाली ❀

ऐ दीनबन्धु स्वामी, सतगुरु कबीर मेरे।
बक्शो दया से अपनी, अवगुण कसीर मेरे॥ टेक॥
जैसा हूँ मैं कुकरमी, व्यभिचारि औ अधर्मी।
दुनिया में कम मिलेंगे, पापी नज़ीर मेरे॥
गिन-गिन सुनाऊँ कितने, जो-जो हैं ऐब मुझमें।
रोशन हैं कुल तुम्हें वो, रोशन ज़मीर मेरे॥
तुम बिन है कौन ऐसा, जो काल से बचावे।
भवसिन्धु में फँसे को, अति धीर बीर मेरे॥
सतनाम दान देकर, कीजे उद्धार मेरा।
मुरशिद मेहरबाँ साहिब, पीरों के पीर मेरे॥
चरणों में आ पड़ा है, "खालिक" की बीनती है।
कीजे सहाय आकर, वक्ते अख़ीर मेरे॥

एक धुनियाँ जाति के सन्त "दादू" जी हो गये हैं। बाद में "दादूदयाल" के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। उनके शिष्य सुन्दरदास

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इसके पश्चात् सदगुरु कबीर साहिब सन्तमण्डली सहित अयोध्या गये। एक दिन की बात है कि कुछ हिन्दू-मुसलमानों में अल्लाह-राम के पक्ष पर बहस होने लगी। उस वाद-विवाद ने इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि दोनों में झगड़ा हो गया, जैसे—

शब्दझड़ी—हिन्दू कहैं मोहि राम पियारा,
तुरुक कहैं रहिमाना।

जी और निश्चलदासजी हुए हैं। वे लोग सदगुरु कबीर साहिब की ओर से हटकर, वेदान्त की ओर मुड़ गये हैं। सदगुरु कबीर साहिब के संबन्ध में "दादूदयाल" जी साहिब की वाणी इस प्रकार है—

साखी—जिन मोको निज नाम दइ, सतगुरु सोय हमार।
दादू दूसर कौन है, कबीर सिरजनहार॥
जैसे मिरगा नाद सुन, तन मन भूले प्रान।
दादू भूले देह गुन, सुनि कबीर को ज्ञान॥
हिन्दू के सतगुरु सही, मुसलमान के पीर।
दादू दोनों दीन में, अदली नाम कबीर॥
कोय सगुन में रिझ रहा, कोय निर्गुन ठहराय।
दादू गति कबीर की, मोसे कही न जाय॥

सदगुरु कबीर साहिब के चमत्कार को देखकर और उनके उपदेशों को सुनकर बलख बुखारा का बादशाह "इब्राहीम" राजगद्दी को छोड़कर फ़क़ीर हो गया। वह बहुत दयालु सिद्ध सन्त हुआ है। इन लोगों से पहिले हुआ है।

गृहस्थ शिष्य तो बहुत थे। उनमें गोरखपुर खलीलाबाद

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

आपुस मँह दोउ लड़िलड़ि मूये,
मरम काहु नहिं जाना ॥

उस झगड़ा को सुनकर सदगुरु कबीर साहिब वहाँ गये और हिन्दू-मुसलमान दोनों को समझाना आरम्भ किया ।

ऐ हिन्दू-मुसलमान भाइय ! मुझे तुम दोनों की बातें सुनकर हँसी आती है कि ये दो ईश्वर कहाँ से आ गये ? किसने तुम दोनों को भरमाया है कि अल्लाह और है राम और है ? जैसे—

का शासक नवाब बिजली खान पठान भी था, जिसने सदगुरु साहिब की स्मृति के लिए मगहर में, फूलों को लेकर, समाधि बनवाई थी, जो आज भी प्रसिद्ध है ।

बादशाह सिकन्दर लोदी सदगुरु कबीर साहिब की बावन कसनी को देखकर चकित हो गया था और पैरों पर गिरकर क्षमा माँगी थी । उसके ऊपर सदगुरु कबीर साहिब के उपदेश और चमत्कार का ऐसा प्रभाव पड़ा कि इस्लाम और मुसलमान जाति का पक्ष छोड़कर, हिन्दू-मुसलमान दोनों को एक दृष्टि से देखने लगा था ।

आज भी बहुत-से मुसलमान कबीरपन्थी हैं । सैंकड़ों की संख्या मे मैंने अपनी आँखों से जिला सीतापुर में देखा है । वे लोग कंठी-माला पहिरते हैं, तिलक लगाते हैं और माँस मदिरा कुर्बानी से दूर रहते हैं ।

इधर हिन्दू राजाओं में शिष्य काशी के महाराज वीरसिंह बघेल और रीवाँ नरेश महाराजा रामसिंहजी थे । हिन्दू-शिष्यों की तो गिन्ती ही नहीं थी ।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ शब्द ❀

भाई रे दुइ जगदीस कहाँ ते आया, कहु कवने भरमाया ।
अल्लह राम करीमा केसव, हरि हजरत नाम धराया ।। टेक ।।
गहना एक कनक ते गहना, इन महँ भाव न दूजा ।
कहन सुनन को दुइ करि थापे, यक निमाज यक पूजा ।। १ ।।
वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरुक कहावे, एक जिमी पर रहिये ।। २ ।।
बेद कितेब पढ़ैं वै कुतुबा, वैं मुलना वै पाँड़े ।
बेगरि-बेगरि नाम धराये, यक मटिया के भाँड़े ।। ३ ।।
कहँहिं कबीर वै दूनों भूले, रामहिं किनहुँ न पाया ।
वै खस्सी वै गाय कटावैं, बादहिं जनम गँवाया ।। ४ ।।

अर्थ --हिन्दू-मुसलमान भाइयो ! ये दो ईश्वर कहाँ से आये हैं ? कहिये किसने तुम लोगों को भरमाया है ? जिसके कहने पर तुम लोग दो ईश्वर मानकर लड़ते-झगड़ते हो । याद रखो ईश्वर एक है । उसी ने अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि और हजरत अनेक नाम धराया है, जिसे सुनकर तुम लोगों को भ्रम हुआ है । यह भ्रम केवल भाषा के कारण हुआ है, वस्तुतः पदार्थ एक है ।

जैसे एक कनक (सोना) से अनेक गहने बनते हैं और उनके अलग-अलग नाम होते हैं, परन्तु सोना एक ही रहता है, दो नहीं ? इसी तरह तुम लोगों ने कहने-सुनने को अल्लाह-राम दो स्थापित किया है, किन्तु अल्लाह-राम एक ही हैं । ऐसा ही कहने मात्र के लिए तुम लोगों का नमाज-पूजा है । (१)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

तुम लोगों के महादेव-महम्मद एक हैं। ब्रह्मा-आदम भी एक ही हैं। इसी तरह तुम हिन्दू-मुसलमान एक मनुष्य-जाति हो और एक ही पृथ्वी पर रहते हो भावार्थ दो ईश्वर होते तो तुम लोगों के लिए दो पृथ्वी बनाते। (२)

जैसे कहने मात्र के लिए मिट्टी के वर्तन अनेक होते हैं और उनके अलग-अलग नाम धर लिये जाते हैं, परन्तु है वह मिट्टी ही। ऐसा ही जो वेद पढ़ता है, वह पंडित कहलाता है। जो किताब (क़ुरान) पढ़ता है, वह मौलवी कहलाता है। दोनों के कर्म (पेशा) एक होने के कारण, दोनों एक हैं। (३)

सदगुरु कबीर साहिब कहते हैं कि हिन्दू-मुसलमान दोनों भूले हैं, राम को किसी ने नहीं पाया। "घट-घट में वह रमै निरन्तर" के अनुसार पाया होता तो एक दूसरे के जान के घातक न बनते। उससे अनजान होने के कारण हिन्दू खसी (बकरा) और मुसलमान गाय कटवाते हैं। इस पाप को करके व्यर्थ में उत्तम मनुष्य जन्म खो देते हैं। (४)

तुम लोगों को इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि—

साखी—अलख इलाही एक है, नाम धराया दोय।
कहैं कबिर दो नाम सुनि, भरम पड़ो मत कोय॥

इस प्रकार सदगुरु कबीर साहिब ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को समझा के शान्त किया।

उपर्युक्त अनेक प्रकार से सदगुरु कबीर साहिब ने एकता

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

तथा शान्ति स्थापित करने के लिए देश-विदेश और गाँव-गाँव की गलियों में घूम-घूमकर प्रचार किया था, यथा—

अर्द्ध साखी—देश बिदेशे हौं फिरा, गाँव गाँव की खोरि।

यह सत्य है कि उपर्युक्त उपदेश के बिना राष्ट्र बलवान नहीं हो सकता और न देश में एकता तथा शान्ति स्थापित हो सकती है, इसलिये सद्गुरु कबीर साहिब के उपदेश के प्रचार की बहुत आवश्यकता है। इसी उपदेश के पथ पर चलकर आदरणीय महात्मा गान्धीजी ने स्वराज्य प्राप्त किया, यह प्रमाण है।

॥ इति विश्वगुरु सद्गुरु कबीर साहिब का मानव सन्देश समाप्त ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ कबीर-वाणी का महत्व ❀

❀ भजन ❀

साहिब कबीर ! नीकी लागै तुहरी बतिया ॥ टेक ॥
गीता पढ़उँ उपनिषद मैं पढ़ लेऊँ,
स्मृतिन में पच्छपात भरा जतिया ।
जाति पच्छ से बेदउ बचा नहीं,
ईश्वर ओट में कइले बाटैं घतिया ॥
नहीं बची हैं क़ुरान हदीस हो,
खुदा की बनाई काटि करत सुनतिया ।
देखि उदार उपदेश तोहार हो,
'बंसू' की फूलीहउए गदगद छतिया ॥

(१)

आदि भेद नहीं पा सकते हो, बिन कबीर की बानी ।
वेद पुरान क़ुरान मत पुस्तक, डारो क्यों न छानी ॥
ब्रह्मा विष्णु महादेव माया, नीरंजन तक जानी ।
आदिपुरुष और स्वयम् आदि की, 'बंसू' बात भुलानी ॥

(२)

तभी पा सकते आदि भेद को, पढ़ो कबीर की बानी ।
या संगति में जाकर सुनिये, जो हैं उसके ज्ञानी ॥
अष्टांगी त्रिदेव निरंजन, आदि पुरुष कहानी ।
'बंसूदास' जानि जावोगे, जो नहिं अब तक जानी ॥

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

❀ सदगुरु कबीर साहिब की प्रशंसा ❀

सदगुरु कबीर साहिब के उत्तराधिकारी और कबीरपन्थ के प्रथमाचार्य धर्मदासजी साहिब का वचन है कि—

❀ भजन ❀

हैं मेरे गुरु करुणासिन्धु कबीर।

अशरण शरण करण मुदमंगल, हरण सकल भवपीर ॥ टेक

जीव उधारण कारण प्रगटे, जग में धारि शरीर।

मीर वजीर देखि भय मानैं, फक्कर वेष फकीर ॥

शाह सिकन्दर कसनी लीना, बहुविधि कर तदबीर।

नहिं बस चल्यो हारि तब चरणन, आप पर्यो आखीर ॥

बीर बघेला के सतगुरु हैं, बिजली खाँ के पीर।

हिन्दू मुसलमान दोनों की, तोड़ी भरम जंजीर ॥

धरमदास कहैं और कौन है, अस समरथ मतिधीर।

मगहर सूखी नदी बहायो, आमी अमृत नीर ॥

इति ❀

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust